वर्ष 29 | कार्तिक-मागसर | नवम्बर - 2024 | अंक 11 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

शुभ दिपावली

भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण कल्याणक से उत्पन्न हुई दिपावली के पश्चात अनंत लब्धिनिधान गुरु गौतमस्वामी के केवलज्ञान से उत्पन्न हुए नववर्ष की

हार्दिक शुभकामनाऐं

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नम:

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

ऐसा बने परिवार....

धम्मो जणओ करुणा माया भाया विवेगनामेणं।
खंति पिआ सप्पुत्तो गुणो कुटुंबं इमं कुणसु॥

- श्री आत्मावबोध कुलक

अर्थात्:- ऐसा परिवार बना जिसमें धर्म-पिता हो, करुणा-माता हो, विवेक भाई हो, क्षमा-प्रिया हो और गुण-सुपुत्र हो।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

सो तवो दुविहो वुत्तो, बहिरब्भंतरोतहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो॥

तप दो प्रकार का कहा गया है- बाह्य और आभ्यंतर। बाह्य तप छह प्रकार का है। इसी प्रकार आभ्यन्तर तप भी छह प्रकार का है। - उत्तरा. सूत्र, 30.7

पाथेय

निराशा की मनोवस्था में भी प्रभु, मैं दया की तुमसे नहीं करुंगा अनुनय विनय, क्योंकि तुम मेरे लिये जो चाहते हो, वही मेरी भी इच्छा हो, सही है मेरा समस्त प्रयास एवं मनोभावना। घोर अंधकार एवं अनेक बाधाओं के बावजूद मेरी प्राण शक्ति आगे बढ़ने के लिए विकल है। वह कदम दर कदम चाहती है निरन्तर अग्रसर होना, और जो कुछ भी अड़चने एवं अविरोध आयेंगे सामने उन्हें मैं परम निष्ठा एवं प्रेम के साथ करुंगा स्वीकार और तुम्हारे प्रत्येक निर्णय का करुंगा सदैव स्वागत सत्कार। प्रभु यदि तुम इस यंत्र को पाते हो अपने अयोग्य, तो भी यह तुम्हारा है इसका अपने में नहीं है कोई अस्तित्व। चाहे तुम इसे नष्ट कर दो या श्रेष्ठ बना दो। यह कुछ नहीं चाहता, नहीं है इसका अपना कोई महत्व और तुम्हारे बिना यह कुछ भी कर सकने में है सर्वथा असमर्थ। इसे स्वीकारो और अपने कार्य की योग्यता करो प्रदान।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 कार्तिक-मागसर नवम्बर 2024 अंक-11

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- जिन वचन में संदेह न कीजे -(संपादकीय)-डॉ.सुभाष जैन 5-6
गुरु बहुमाणो मोक्खो, इच्छा शक्ति

4- बच्चों को धार्मिक अध्ययन करानेवाले दिलीपभाई बी. मालवीया (लुहार) की 7-8
अनुमोदनीय आराधना, सिगरेट के धुंए से कैंसर.... कर्म-मेहर और कहर-
श्री पुण्योपदेश प्रकरण

5- भरहेसर सज्झाय, संसार जीव के सात सुख ? 9-11

6- चार्तुमास पूर्ण : कार्तिक पूर्णिमा के बाद विहार का विधान- शांतिलाल सगरावत, 12
नमो अरिहंताणं

7- यह संदेश आपको काम आ सकता है.... रास्ते में गौ माता का दर्शन होता है शुभ 13

8- संविधान बनाने में जैनों का योगदान, गिरीराज महिमा, ये दोष तेरे में तो नहीं 14

9- गगसेन एवं गंगाराम (अनर्थ दंड), मुक्ति का संकेत, विनय-प्रशम बिना शोभा कैसी....15-16

10-पांचवां आरा, नींव, एक बहुत लाजवाब पोस्ट 17-18

11-बढ़े चलें आत्मसाधना के पथ पर, सृजन, गाय जगाए सोया भाग्य 19-20

12-जीवन देवता की साधना-आराधना, चार पैसों का रहस्य, सामाजिक संस्थाओं 21-22
से जुड़े हुए व्यक्तियों के लिए बेहतरीन मैसेज

13-सब कुछ बदलने में देर नहीं लगें- डॉ. सुभाष जैन 23

14-सकारात्मक रखें दृष्टिकोण 24

15-आत्मदृष्टि से जीवन बनता है उत्सव, भगवान 25-26

16-जीवदया फण्ड (विज्ञापन) 27

17-वर्ग पहेली- 354 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 28

18-ज्ञान गंगोत्री-354-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.एक आध्यात्मिक पथिक 29

19-शासन-समाचार 30-41

20-हमारे तीज त्यौहार,सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक 42
प्रतिनिधि नियुक्त करना है

संपादकीय

जिन वचन में संदेह न कीजे

विश्व का सबसे प्राचीन दर्शन जैन दर्शन है याने सबसे प्राचीन धर्म जैन धर्म है। भौतिक आध्यात्मिक और शैक्षिक दृष्टि से लेकर वर्तमान तक हमारी संस्कृति संस्कार साधना और साध्य की अत्यन्त समृद्ध और गौरवशाली परम्परा रही है। हमारा सामाजिक ताना बाना इतना समृद्ध है कि जैनत्व पर विश्वास रखनेवाला प्रत्येक व्यक्ति उच्च मानवीय गुणों और धर्म के आचार को पालने से परिपूर्ण रहा है और आज भी है। समरसता, सहृदयता, सद्भावना, संतोष, शांति के साथ अहिंसा, अपरिग्रह और इन्द्रियों के नियंत्रण की साधना के साथ जीवन निर्वाह करते हुए बोधि समाधि पाने के लिये जिनगुण सम्पदा को प्राप्त करना जैनी की पहचान रही है। हमारा धर्म वैराग्यमयी धर्म होने के साथ दायित्व और जिम्मेदारियों के बोध से परिपूर्ण है। **जैन धर्म में तन के साथ वतन का भी आदर करने की परम्परा है।**

तत्वार्थ सूत्र का पहला ही सूत्र है, **सम्यक दर्शन, ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः**, इन तीनों के योगदान से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। हमारे आगम ग्रंथ यह भी कहते है कि ज्ञान और चारित्र तभी सम्यक और कार्यकारी होंगे जब आपका दर्शन श्रद्धा सम्यक है। सम्यक श्रद्धा के बगैर आप आगे नहीं बढ़ सकते है। यह जैनत्व का आधार है यही कारण है कि आगाम शास्त्र में कही गई एक भी बात असत्य सिद्ध नहीं हुई है। भूगोल, खगोल किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक जैन धर्म में बतलाई गई बातों पर प्रश्न चिन्ह खड़ेनहीं कर सके है। जैन धर्म दुनिया भर के धर्मो में सर्वाधिक वैज्ञानिक धर्म है, एक ऐसा धर्म है जिसके प्रत्येक सिद्धांत, प्रत्येक नियम, प्रत्येक आध्यात्मिक अपेक्षा या आदेश को हम तर्क से, विज्ञान से प्रयोगशाला में सिद्ध कर सकते हैं। जहां अन्य धर्म या मान्यता धर्म को परमात्मा का उपदेश बताते है जबकी हमारे परमात्मा कहते है कि धर्म वस्तु का स्वभाव है। जिस वस्तु की जो प्रकृति (Nature) है वही उसका धर्म है। पानी का धर्म शीतलता है तो अग्नि का धर्म उष्णुता है।

हमारी धर्म क्रिया में हर बात का तर्क के साथ विधान बतलाया गया है। प्रत्येक श्रावक को करने योग्य छः आवश्यक बतलाये गये है, पर हमें इन पर विश्वास नहीं होता है, हम सिर्फ तर्क करना जानते है, गहराई में प्रवेश करेंगे तो जिन वचन पर विश्वास होने लगेगा। 11 लाख वर्ष पूर्व श्री पाल मयैणा सुन्दरी का कुष्ठ रोग पक्षाल से समाप्त हो सकता है, पादलिप्तसूरी आकाश गामिनी विद्या के धारक थे, नवकार महामंत्र की हजारों हजार सत्य घटनाएं आज भी असंभव को संभव करती दिखाई देती है। तप के प्रभाव को भी सैकड़ों उदाहरण हमारे सामने आते है तो भी हम इन बातों में कल्पना, परिकथा, फेण्टेसी मिथ्या समझ कर उस पर विश्वास श्रद्धा नहीं कर पाते है तो इसका मतलब यह नहीं है कि जिन वचन झूठे है, वास्तव में तो हमने उन्हें समझा ही नहीं है। आज भी बुद्धि के प्रयोग हमारे सामने मुनि भगवंत कर रहे है, शतावधान ही नहीं सहस्तावधान से हमारी बुद्धि को चमत्कृत कर रहे है तो भी जिन वचन शास्त्र पर श्रद्धा विश्वास नहीं ? तो करोड़ों वर्ष पूर्व जन्म लेनेवाले हमारे प्रथम तीर्थकर परमात्मा को हम आज भी क्यों श्रद्धा विश्वास से पूजते है ? यह बात दिमाग में नहीं आती है ? करुणा वात्सल्य से परिपूर्ण परमात्मा ने जगत के जीवमात्र के कल्याण का मार्ग बतलाया है, अरे भगवान तो अभूतपूर्व, अतुलनीय है, परमात्मा के मार्गदर्शक गुरु भगवंत ही अपने आत्मबल और आराधना से हमें सत्य का साक्षात्कार कराने में सक्षम है। मेरे जीवन में सैकड़ों प्रसंग घटित हुए है, जिन्होंने परमात्मा, धर्म और गुरु भगवंतों के प्रति अपार श्रद्धा और विश्वास को जीवन सुदृढ़ किया है।

''दुषम काले जिनबिंब''
जिनागम भवियण कुं आधारा....''

जिनागम याने परमात्मा की अमृतवाणी और जिनबिंब याने परमात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन, जिनागम जैन दर्शन का संविधान है, मुख्य आधार है, परमात्मा की वाणी एक अमूल्य दस्तावेज समृद्ध और मूल्यवान धरोहर है। परमात्मा की प्रत्यक्ष उपस्थिति का आभास करानेवाली परमात्मा की अमृतवाणी है। अपनी कठोर साधना और उग्र तपस्या से केवल ज्ञान प्राप्त कर परमात्मा ने विश्व के स्वरुप को हमारे सामने रखकर सर्वजन हिताय देशना प्रदानकर महान उपकार किया है। हमारे आगमग्रंथ हमें परमात्मा की अनुभूति कराते है। इन आगम ग्रंथों से जीवमात्र के कल्याण के लिये जीवन जीने के सूत्र दिये है, यही नहीं विश्व का वास्तविक स्वरुप

खगोल-भूगोल, ज्योतिष्य आदि का प्रचुर ज्ञान एवं गुढ़ रहस्यों का अमूल्य खजाना इन ग्रंथों से भरा हुआ है। इन सब पर विश्वास करने के लिये हमारे पास दो रास्ते है, पहला है कि हम परमात्मा की वाणी पर दृढ़श्रद्धा और विश्वास करें ''**तत्वार्थ श्रद्धानं सम्यक् दर्शनं**'' और फिर भी विश्वास नहीं होता है। तो अपने तर्क और बुद्धि का प्रयोग कर उसे समझे, आगमग्रंथों में दिये गूढ़ अर्थों को समझने के लिये अपनी योग्यता का सही परीक्षण करने अपने को उसके योग्य बनाये तब आपको वास्तविकता का ज्ञान हो पायेगा। आप अपने जीवन में डॉक्टर, वकील, सीए सलाहकार की बातों को जितनी सहज से बगैर यह जाने कि वह गलत है या सही हैं विश्वास कर लेते है उस पर अमल कर लेते है तो फिर परमात्मा की वाणी और जिनबिम्ब की वास्तविक सच्चाई पर हम तर्क क्यों करते है, उस पर विश्वास क्यों नहीं हो पाता है ? पानी में, जमीकंद में जीवों की उपस्थिति पर तो हमें विश्वास हो गया है तो फिर अन्य बातों पर प्रश्नचिन्ह क्यों खड़े करते है ? इस पर विचार करने जैसा है।

धन्य है हमारे गुरु भगवंत जिन्होंने परमात्मा की अक्षुण्य बुद्धि और दिव्य ज्ञान से जानकर हमारे हित के लिये प्रकट कर हम पर महान उपकार किया है, आप इस पर गहन चिंतन विचार कीजिये, तो आप से फिर यह नहीं कहना पड़ेगा कि-

''जिन वचन में सन्देह न कीजे।''

** डॉ. सुभाष जैन*

इच्छा शक्ति

अलाबामा (यू.एस.ए.) में छह वर्ष के एक बच्चे गेब मार्श की बड़ी लोमहर्षक घटना प्रकाश में आई है। जब वह पैदा हुआ तो उसके दोनों पैर नहीं थे, केवल एक हाथ था। मार्श परिवार ने ऐसे सभी विकलांग बच्चों को गोद ले रखा है क्योंकि उनके माता-पिता उन्हें छोड़जाते हैं। मार्श परिवार के पास ऐसे 60 बच्चे हैं। एन एवं एड मार्श को यह शक था कि बाकी चीजें धीरे-धीरे सीख लेगा, पर यह शायद तैर नहीं पाएगा, पर अपने सभी साथियों को तैरते देखकर उसने भी तैरना सीख लिया। गुंटर्स विल स्वीम टीम का वह एक सदस्य है। इच्छा शक्ति प्रबल हो तो क्या नहीं हो सकता। अभी उसके नेतृत्व में 6 से 10 वर्ष के ग्रुप में बच्चों की चैंपियनशिप वह जीतकर आया है।

''गुरु बहुमाणो मोक्खो।''

आचार्य पद प्राप्त होने के बाद भी वे अपने लिए आचार्य आनंदसागरसूरीजी नहीं लिखते थे। कारण पूछने पर कहते- व्यवहार के लिये आचार्य पदवी स्वीकार करनी पड़ी, परन्तु सचमुच मुझ में आचार्य की योग्यता नहीं है, पात्रता नहीं है। केवल दो ही आगम मंदिरों में (पालीताणा-सूरत) आचार्य आनन्दसागर लिखा हुआ है। यह भी इस कारण कि भविष्य के इतिहासकार कहीं भूल न करें।

सागरजी को चम्मच से उलीच नहीं सकते। पूज्य सागरजी के गुणानुवाद करने वाले हम कौन? हमनेउन्हे नही देखा आज वे विद्यमान नहीं है, परन्तु उनकी प्रतिकृति एवं कृति विद्यमान है। भगवान की तरह गुरु को याद करने से भी पवित्र बना जा सकता है।

शास्त्रों में कहा गया है- **''गुरु बहुमाणो मोक्खो।''**

जीवन में गुरु का बहुमान जगे वही मोक्ष है। आठ कर्मों का क्षय होने पर मोक्ष होगा, यह बात सही है। उससे पूर्व मोक्ष प्रकट करना है तो गुरु को भगवान के रुप में देखना है। भगवान का परिचय कराने वाला भगवान से भी बढ़ जाता है। यदि गुरु न होते तो भगवान कहां से पहचान पाते ? गुरु- भक्ति के प्रभाव से अपनी आत्मा भगवान के साथ जुड़ जाती है।

आगमों में भगवान हैं यह समझा जाये तो स्वाध्याय करते समय भी भगवान याद आयें।

अभी आगम मंदिर के दर्शन करते समय क्या पूज्य सागरजी के दर्शन नहीं होते ?

कलिकाल में दो ही भगवान हैं।
जिनागम=बोलते भगवान।
जिनमूर्ति=मौन भगवान।

आगम के प्रति जितना आदर बढ़ेगा, उस प्रमाण में भगवान मिलेंगे।

बच्चों को धार्मिक अध्ययन करानेवाले दिलीपभाई बी. मालवीया (लुहार) की अनुमोदनीय आराधना

पिण्डवाड़ा (राजस्थान) निवासी, लुहार कुलोत्पन्न, दिलीपभाई मालवीया का दृष्टांत उनके उपकारी गुरु महाराज के श्रीमुख से सुनकर प्रकाशित किया गया है। एक पैर से विकलांग होते हुए भी वे शंखेश्वर तीर्थ में आयोजित अनुमोदना समारोह में पधारे थे। अपने जीवन परिवर्तन के प्रसंग को कुछ विस्तार से लिखकर भेजने की हमारी सूचना को शिरोमान्य करते हुए उन्होंने अपना इति वृत्त लिखकर भेजा,जो यहां उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत किया जा रहा है। वाचक सज्जन इस दृष्टांत में से यथोयोग्य सत्प्रेरणा ग्रहण करेंगे यही मंगल भावना।

''बचपन से ही एक पैर से विकलांग होने की वजह से मेरे माता-पिता आदि मेरी पढ़ाई में विशेष दिलचुस्पी लेते थे, अतः 8 वीं कक्षा तक मैं स्कूल में प्रायः प्रथम नंबर में पास होता था। मैं पढ़ने के लिये मेरे एक जैन मित्र जितेन्द्र के घर जाता था। उसके घर के वातावरण का मुझ पर भारी प्रभाव पड़ा।

एक दिन जितेन्द्र के माता-पिता ने मुझे कहा कि- ''दिलीप ! तू विकलांग है, क्योंकि तूने पिछले जन्म में जरुर कोई बड़ा पाप किया होगा, अतः प्रकृति ने तुझे यह सजा दी है। तो अब अगर अधिक दुःखी नहीं होना है तो तू इस जीवन में व्यसन और पाप का सेवन नहीं करना और जीवदयामय जैन धर्म का पालन कर।'' यह सुनकर मैं गहरे सोच विचार में उतर गया। क्योंकि हमारे घर में अण्डे, मांस, शराब आदि का सेवन और जीवहत्या करना सहज बात थी। मैं भी यह सब करता था। इसलिए उपरोक्त बात सुनकर मैं मेरे दोस्त जितेन्द्र की बहन महाराज साहब के पास गया। उनकी प्रेरणा से मैंने उपरोक्त सभी पापों का त्याग किया एवं जैन साहित्य का वांचन शुरु किया। धीरे-धीरे मेरा मन मजबूत होता गया। तीन वर्ष के बाद मैंने वर्धमान तप की 100 ओली के तपस्वी प.पू.पं. श्री कनकसुंदरविजयजी म.सा. को मेरे गुरु के रुप में स्वीकार किया और उनके आर्शीवाद एवं आज्ञा से मैं जैन धर्म की आराधना करने लगा। आयंबिल की ओली, कषाय जय तप, तीर्थयात्रा, धार्मिक शिविर आदि में भाग लेने लगा।

आज मैं एकदम बदल गया हूं। भक्तामर स्तोत्र और पंच प्रतिक्रमण सूत्र आदि को कंठस्थ करने में गुरु कृपा से मुझे सफलता मिली है। मैं बच्चों को ट्यूशन देता हू उसके साथ साथ धार्मिक ज्ञान भी देता रहता हूं। मेरे विद्यार्थियों के साथ मैंने एक धार्मिक शिविर में भाग लिया था। उस शिविर में मेरा एक विद्यार्थी प्रथम नंबर में उत्तीर्ण हुआ था। अतः शिविर के समापन समारोह में उस विद्यार्थी के साथ मेरा भी बहुमान किया गया था। सं. 2052 में भाद्रपद पूर्णिमा के दिन शंखेश्वर तीर्थ में पू.गणिवर्य श्री महोदयसागरजी म.सा. द्वारा संपादित बहुरत्ना वसुंधरा किताब में वर्णित आराधकों के साथ मेरा भी बहुमान किया गया था। इसमें मुझे अत्यंत प्रोत्साहन मिला।

धीरे-धीरे मैंने अपने परिवार के सदस्यों को भी प्रेरणा देकर उपरोक्त पापों को बंद कराने में सफलता प्राप्त की है। केवल मेरे पिताजी को एक मात्र शराब का व्यसन छुड़ाने में असफल रहा हूं। मगर उसके लिए भी मेरे प्रयास जारी है। उम्मीद रखता हूं कि गुरुदेव की कृपा से एक दिन इसमें भी जरुर कामयाब होऊंगा।

अब देव-गुरु की असीम कृपा से मैंने जो संकल्प किये है उसका संक्षेप में वर्णन करता हूं और आशा रखता हूं कि इनका अच्छी तरह से पालन करने के लिये मुझे चतुर्विध श्री संघ के आर्शीवादों का बल संप्राप्त होता रहेगा।

1- साल में एक बार श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा की पूजा सेवा भक्ति करनी।

2- 3 साल में एक बार पालीताना जाकर आदिनाथ दादा की पूजा सेवा-भक्ति करनी।

3- साल में दोनों बार नवपदजी की आयंबिल ओली की आराधना करता हूं। किसी तीर्थ स्थान में ओली की आराधना का सामूहिक आयोजन होता है तो उसमें मुझे एक पूजा, प्रतिक्रमण, प्रभुभक्ति आदि करने में अधिक आनंद आता है।

4- सालभर में कहीं से भी यदि बस द्वारा तीर्थयात्रा संघ में जाने का लोभ मिलता है तो मैं उसमें जरुर शामिल होने की भावना रखता हूं।

5- आलु, प्याज, इत्यादि जमीकंद एवं बाजार की मिठाई आदि का त्याग है।

6- टीवी, कोलगेट और 21 महिनों तक जूते पहनने का त्याग है।

7- भगवान के दर्शन किये बिना अन्न जल ग्रहण नहीं करता।

सिगरेट के धुंए से कैन्सर....

पोलोनियम का जहर आपकी अंगुलियों के बीच फसी सिगरेट के हर एक कश में है। इसी पोलोनियम के कारण सिगरेट पीने वालों के फेफड़ों को कैन्सर हो जाता है। इतना ही नहीं, सिगरेट के धुंए में निकोटीन, सीसा और कई जहरीले रसायन होते हैं लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि धूम्रपान से निकले धुंए में कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस भी होती है। यानी दिन-रात सिगरेट के छल्ले उड़ाने वालों को यह छल्ले ही उसकी सांसों को निगल सकते है। पिछले दिनों रुस के पूर्व जासूस एलेक्जेंडर लिटविनेंनको की पोलोनियम से मौत हुई थी। लेकिन इस बात का शायद ही किसी को एहसास हो कि अत्यधिक रेडियोधर्मी घातक तत्व पोलोनियम सिगरेट के धुंए में भी होता है और यह सिगरेट के गुलाम लोगों के फेफड़े का कैन्सर होने का मुख्य कारण है। परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड (एईआरबी) के पूर्व सचिव डॉ. के.एस. पार्थसारथी का कहना है कि सिगरेट के धुंए में रेडियोधर्मिता होती है। धूम्रपान करने वाले सिगरेट के कश से ना सिर्फ खुद के शरीर में जहर घोलते है बल्कि आसपास सांस ले रहे लोगों को भी इस जहरीले धुंए से नुकसान पहुंचाते हैं। सिगरेट के कश में पोलोनियम- 210 और सीसा-210 होता है। यह दोनों ही तत्व रेडियोधर्मी है। इससे फेफड़े का कैन्सर होने का खतरा है। वहीं भारतीय तम्बाकू नियंत्रण संगठन की अध्यक्ष डॉ. सजीला मैनी ने कहा कि सिगरेट से होने वाले खतरे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस संगठन ने इस मामले में सरकार के खिलाफ एक जनहित याचिका दायर कर रखी है। साथ ही सरकार से सिगरेट के निर्माण और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की है। कई गैर सरकारी संगठनों और स्वास्थ्य निकायों ने पहले भी सरकार से सीधे सिगरेट निर्माताओं को पैकेट पर निकोटीन की मात्रा के बारे में जानकारी देने को कहने की अपील की थी।

8- प्रातःकाल में भक्तामर स्तोत्र का पाठ एवं घर से बाहर निकलते समय नवकार महामंत्र का स्मरण अचूक करता हूं।

9- हर रविवार को सुबह 11 बजे बच्चों को जैन धार्मिक सूत्रों की अंताक्षरी सिखाता हूं इसमें भाग लेने वाले बच्चों को मेरी ओर से इनाम देता हूं। इस कार्यक्रम में निश्रा देने के लिये मैं उपस्थित साधु-साध्वीजी भगवंतों को विज्ञप्ति करता हूं। वे भी इस कार्यक्रम से प्रसन्न होकर हमें आर्शीवाद प्रदान करते हैं।

10- बीज, पांचम और एकादशी को एकाशन तथा अष्टमी और चतुर्दशी को आयंबिल करता हूं। एकाशन की अपेक्षा आयंबिल में मुझे अधिक आनंद आता है। श्रीदेव गुरु की असीम कृपा से आज तक 9 ओलियां, 08 एकाशन एवं 76 आयंबिल करा सका हूं। आगे भी तपश्चर्या जारी है।

11- रात्रि भोजन का त्याग है। अचानक कभी बाहर जाना पड़ता है तब मुझे बहुत कठिनाई होती है। क्योंकि मैं बाजार का कुछ भी खाता नहीं हूं और जैन भोजनशाला में मुझे अनुमति नहीं दी जाती है, जिससे मुझे कई बार भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। दिलीपभाई की इस विज्ञप्ति पर खास ध्यान देने के लिए सभी महानुभावों से खास अनुरोध है। इसी प्रकार से अन्य भी अजैन कुलोत्पन्न जो आराधक जैन धर्म को अच्छी तरह से समर्पित हो उनको भी जैन श्रावक की तरह हर प्रकार से सहयोग देना हमारा खास कर्त्तव्य है। सुज्ञेषु किं बहुना।

कर्म-महेर और कहर

वक्रोऽयमात्मानं दत्ते निगोदं नरकादिकम्।
अवक्रश्चक्रिशक्रादिपदं कर्मप्रभुर्बली॥

- श्री पुण्योपदेश प्रकरण

अर्थात्:- बलवान ऐसा कर्मराजा अगर टेढ़ा चले तो निगोद और नरकगति देता है और अगर सीधा चले तो चक्रवर्तीपद और इन्द्रपद भी देता है।

✻ परमात्मा की शरणागति पाए बिना मनुष्य जीवन जैसा बहुमूल्य अवसर भी बेकार में ही बीत जाता है।

भरहेसर सज्झाय

गतांक से आगेः-

30- कुमार वङ्कचूलः- विराट देश का राजकुमार। इन्हें बाल्याकाल से ही जुआ, चोरी आदि महाव्यसन लागू हो गये थे। पिता ने परेशान होकर देश निकाल दिया। तब ये अपनी पत्नी (तथा एक बहिन) के साथ जंगल में रहने लगे। फिर वही पल्लीपति हो गये। एक समय इनकी पल्ली में मुनि ने चार्तुमास किया। चार्तुमास पूर्ण होने के पश्चात मुनि के उपदेश से इन्होंने- 1- अपरिचित फल नहीं खाना। 2- प्रहार करने से पूर्व सात कदम पीछे हटना। 3- राजा की पटरानी के साथ सांसारिक भोग नहीं भोगना तथा 4- कौए का मांस नहीं खाना, ये चार नियम ग्रहण किये और अन्त तक इनका दृढ़ता पूर्वक पालन किया, जिससे मरकर बारहवें देवलोक में उत्पन्न हुए।

31- गजसुकुमालः- श्री कृष्ण के छोटे भाई। बाल्यावस्था में वैराग्य हुआ। माता-पिता ने मोह-पाश में बंधने के लिये विवाह कर दिया। परन्तु शीघ्र ही संसार का त्याग करके श्री नेमिनाथ प्रभु के निकट जाकर इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और उनकी आज्ञा लेकर श्मशान में कायोत्सर्ग करके ध्यान में खड़े रहे। इतने में इनका श्वसुर सोमशर्मा ब्राह्मण उधर से निकला। वह गजसुकुमाल को मुनिवेश में ध्यानमग्न देखकर अत्यन्त क्रूद्ध हुआ उसने अपनी पुत्री का जीवन बिगाड़ने के कारण इनको योग्य दण्ड देने का निर्णय किया। अतः वहां पास में ही जो चिता जल रही थी, उसमें से धधकते हुए अंगारे ले कर, इनके मस्तक पर रख दिये। गजसुकुमाल इससे तनिक भी क्षुब्ध नहीं हुए। अपितु, मन को ध्यान में और भी दृढ़ किया। ऐसा करने से ये अन्तकृत केवली हुए और मोक्ष में गये।

32- अवन्तिसुकुमालः- अवन्ति-सुकुमार। इनके पिता का नाम भद्र और माता का नाम भद्रा था। ये उज्जयिनी के निवासी थे और इनके बत्तीस पत्नियां थी। एक बार आर्य सुहस्तिसूरी के समीप ''नलिनीगुल्म'' अध्ययन सुनते हुए जाति-स्मरण-ज्ञान उत्पन्न हुआ और सब वैभव छोड़कर उन्हीं से ग्रहण की। तदनन्तर श्मशान भूमि में कायोत्सर्ग ध्यान में मग्न थे तब एक सियार ने इनके शरीर में काट खाया, परन्तु ये ध्यान से बिलकुल डिगे नहीं। फिर शुभ ध्यान में मृत्यु को प्राप्त हो, नलिनीगुल्म विमान में देव हुए। इनके मृत्युस्थल पर माता-पिता ने एक बड़ा प्रासाद बंधवाकर उसमें पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा करवायी, जो ''**अवन्ति-पार्श्वनाथ**'' के नाम से प्रसिद्ध है।

33- धन्यकुमारः- इनके पिता का नाम धनसार और माता का नाम शीलवती था। इन्होंने अपने बुद्धिबल से अक्षय लक्ष्मी उपार्जित की थी। कालान्तर में अपनी आठ पत्नियों का त्याग करके साले शालिभद्र के साथ दीक्षा ग्रहण की और उग्र तपश्चर्या की।

34- इलाचीपुत्र :- ये श्रेष्ठि-पुत्र होते हुए भी एक नटकी पुत्री के मोह में पड़ गये और उसके साथ विवाह करने के लिये नटकी इच्छानुसार नट बने थे। अपनी अद्भूतकला से राजा को प्रसन्न करने के लिये एक बार ये बेन्नातट नगर में गये। वहां बांस और रस्सी पर चढ़कर अद्भूत खेल करने लगे, किन्तु नटपुत्री को देखकर मोहित बना हुआ राजा प्रसन्न नहीं हुआ। इतने में दूर एक मुनि को देखा। उन्हें एक रुपवती स्त्री भिक्षा दे रही थी, किन्तु वे ऊंची दृष्टि करके भी उसको नहीं देख रहे थे। यह देखकर इन्हें वैराग्य हुआ और वैसी ही भावना करने से वहीं केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

35- चिलातीपुत्रः- चिलाती नाम की दासी के पुत्र ये पहले एक सेठ के यहां नौकरी करते थे, पर सेठ ने अपलक्षण देखकर इनको निकाल दिया, तब ये जंगल में जाकर चोरों के सरदार बने। इनको सेठ की सुषमा नामक पुत्री पर मोह था, इससे एक बार सेठ के घर डाका डाला और पुत्री को उठा ले गये। अन्य चोरों ने दूसरा धन-माल लूटा। इतने में कोलाहल होने से सिपाही आ पहुंचे। उनके साथ सेठ तथा सेठ के पांचों पुत्रों ने पीछा किया। तब अन्य चोर धन-माल मार्ग में छोड़कर भाग गये। सिपाही वह धन लेकर लौट गये, पर चिलाती ने सुषमा को नहीं छोड़ा और वह जंगल में चला गया। सेठ ने अपने पुत्रों के साथ उसका बराबर पीछा किया। जब समीप आ गये, तो उनको देखकर चिलाती ने सुषमा का सिर काट लिया और धड़ वहीं पड़ा रहने दिया। सेठ उसको देखकर रुदन करता हुआ वापस लौट आया। चिलाती पुत्र को अब कुछ शान्ति मिली। धीरे-धीरे वह जंगल में चलने लगा। वहीं एक मुनि को ध्यान में स्थित देखा। उन्होंने चिलाती पुत्र को तीन पद दिये- ''**उपशम, विवेक और संवर।**'' और आकाश मार्ग में चले गये। उक्त तीन पदों का अर्थ विचारते हुए चिलाती

पुत्र वहीं खड़ा रहा और शुभ ध्यान में मग्न हो गया। उसका शरीर लहू से भरा हुआ था। अतः लहू की गंध से चीटियां आ पहुंची और काटने लगी, परन्तु वह ध्यान से विचलित नहीं हुआ। ढाई दिनों में तो उसका शरीर छलनी जैसा हो गया। किन्तु उसने सारे दुःखों को समभाव से सहन कर लिया और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग को गया।

36- युगबाहु मुनिः- पाटलिपुत्र नाम के नगर में विक्रमबाहु नाम का राजा था। उसकी मदनरेखा नाम की रानी थी। प्रोढ़ावस्था में उसके पुत्र हुआ। उसका नाम युगबाहु रखा गया। इनको शारदादेवी तथा विद्याधरों की सहायता से अनेक विद्याएं प्राप्त हुई थी और अनंग सुन्दरी नामक अत्यन्त रुपवती रमणी के साथ इनके लग्न हुए थे। तत्पश्चात ज्ञानपंचमी की विधिपूर्वक आराधना करके दीक्षा ली और उग्र तपश्चर्या करके कर्मक्षय किया तथा केवलज्ञान प्राप्त किया।

37-38- आर्य महागिरि और आर्य सुहस्तिसूरिः- ये दोनों श्री स्थूलभद्रजी के दशपूर्वी शिष्य थे। इस समय में जिनकल्प का विच्छेद था। तो भी आर्य महागिरि गच्छ में रहकर जिनकल्प की तुलना करते थे और आर्य सुहस्ति संघ का भार वहन करते थे। आर्य सुहस्तिसूरि ने कालान्तर में अवन्तिपति सम्प्रति राजा को प्रतिबोध दिया। उस राजा ने जिनदेवों के अनेक मंदिर बनाकर अनार्य देश में भी साधुओं के विहार करने की सरलता करके जैन धर्म की बहुत प्रभावना की। जैन शासन का प्रभाव इनके समय में अत्यन्त विस्तार को प्राप्त हुआ था।

39- आर्य रक्षितसूरिः- ये विद्वान ब्राह्मण थे। जब ये अध्ययन करके वापस लौटे तब बहुत बड़ा उत्सव हुआ। पर जैन धर्म का पालन करनेवाली माता इस अध्ययन से प्रसन्न नहीं हुई। उसने कहा- दृष्टिवाद के अतिरिक्त अन्य हिंसा प्रतिपादक शास्त्र नरक में ले जानेवाले हैं। माता के ऐसे वचन सुनकर आर्यरक्षित तोसलिपुत्र आचार्य के पास गये और उक्त अध्ययन की योग्यता प्राप्त करने के लिये जैन दीक्षा ग्रहण की। गुरु के समीप जितना दृष्टिवाद था वह सब पढ़ लिया फिर वज्रस्वामी के पास गये और नवपूर्वक का अभ्यास किया। कुछ काल पश्चात माता-पिता आदि सारे कुटुम्ब को प्रतिबोध कर दीक्षा दी। जैन श्रुतज्ञान के द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकरणानुयोग और धर्मकथा नुयोग ऐसे चार विभाग इनके द्वारा हुए हैं।

40- उदयन राजर्षिः- ये वीतभय नगरी के राजा थे। अपने भानजे केशी को राजगद्दी देकर इन्होंने दीक्षा ग्रहण की थी। इधर-उधर विहार करते-करते पुनः जब वीतभय नगरी में आये, तब राजा के मंत्री द्वारा इन पर विषप्रयोग हुआ। यद्यपि उस समय तो ये देव-सहाय से बच गये किन्तु बाद में विष-प्रयोग सफल हुआ। अपने को जहर दिया गया है ऐसा जानते हुए भी अन्त तक शुभ ध्यान में रहे और मरकर स्वर्ग में गये।

41- मनकः- श्री शय्यम्भवसूरि के पुत्र और शिष्य। इनकी आयु अल्प थी, इस कारण साधु धर्म का शीघ्र ज्ञान कराने के लिये सूरिजी ने सिद्धांतों का सार रुप दशवैकालिक नाम का सूत्र बनाया। इस सूत्र का अभ्यास कर छः मास तक चारित्र का पालन कर स्वर्ग में गये।

42- कालकाचार्य :- 1- तुरिमणि नगरी में कालक नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी बहिन का नाम भद्रा था तथा भद्रा के भी एक पुत्र था, जिसका नाम दत्त था। कालक ने दीक्षा ली थी एवं दत्त महान उद्धत और सातों व्यसनों में पारंगत था, धीरे-धीरे उसने जितशत्रु राजा से राज्य छीन लिया और उस राज्य का अधिपति बन बैठा। फिर उसने यज्ञ आरंभ किया, जिसमें अनेक जीवों का संहार होने लगा।

एक समय कालकाचार्य (संसारी अवस्था के उसके मामा) विहार करते वहां आये तब दत्त ने उनको यज्ञ का फल पूछा। तब कालकाचार्य ने कहा कि ''ऐसा हिंसामय यज्ञ करने से नरक की ही गति प्राप्त होती है।'' दत्त ने इसका प्रमाण मांगा, तब आचार्य ने कहा कि ''आज के सातवें दिन तेरे मुख में विष्ठा पड़ेगी, यही इसका प्रमाण है।'' आचार्य की बात सत्य निकली और मरकर वह सातवें नरक में गया। जितशत्रु राजा फिर से राज्य सिंहासन पर बैठा और उसने कालकाचार्य के उपदेश से जैन धर्म अंगीकार किया।

2- कालकाचार्यः- इनके पिता का नाम प्रजापाल था और वह श्रीपुर का राजा था। इनके भानजे बलमित्र और भानुमित्र के आग्रह से इन्होंने भरुच में चार्तुमास किया, पर पूर्वभव के वैरी गंगाधर पुरोहित ने राजा को उलट-पुलट समझाकर युक्ति से इनको चार्तुमास में ही दूसरे स्थान के लिये निकलवाया, इसलिये ये वहां से प्रतिष्ठानपुर चार्तुमास करने गये। वहां के राजा शालिवाहन ने इनका नगर-प्रवेश महान उत्सव के साथ करवाया। पर्युषण पर्व निकट होने से राजा ने कहा कि भाद्रपद शुक्ला पंचमी के दिन यहां इन्द्र महोत्सव मनाया जाता है इसलिये पर्युषण पर्व पहले अथवा बाद में रखना चाहिये, जिससे हम उसका आराधना कर सकें

। तब कालकाचार्य ने कहा कि- विशिष्ट कारण उपस्थित होने पर चतुर्थी के दिन इसका आराधन हो सकता है। तब से पंचमी के स्थान पर चतुर्थी की संवत्सरी हुई।

श्री सीमंधर स्वामी ने इन्द्र के समक्ष कालकाचार्य की प्रशंसा की कि ''निगोद का स्वरुप कहने में उनके जैसा दूसरा कोई नहीं है। यह सुनकर इन्द्र ब्राह्मण का रुप लेकर इनके पास आया और इससे निगोद का स्वरुप पूछा कालकाचार्य ने सब यथार्थ रुप में कह दिया, जिससे इन्द्र प्रसन्न होकर स्वस्थान पर चला गया।

3- कालकाचार्यः- इनके पिता का नाम वज्रसिंह और माता का नाम सुरसुन्दरी था। ये मगध देश के राजा थे। इन्होंने गुणधरसूरि से दीक्षा ग्रहण की थी। इनकी बहिन सरस्वती ने भी इन्हीं के साथ दीक्षा ली थी।

एक समय ये उज्जयिनी में आये, तब सरस्वती साध्वी भी वहां आयी थी। वह साध्वी जब बाहर जाकर पुनः शहर में आ रही थी, तो वहां के राजा गर्दभिल्ल ने उसको अत्यन्त स्वरुपवती देख, पकड़वाकर महल में भेज दी। इस बात का समाचार मिलते ही सूरीजी ने संघ को खबर दी तथा अन्य अनेक प्रकारों से राजा को समझाया परन्तु दुराचारी राजा समझा नहीं, तब सूरीजी ने वेश-परिवर्तन कर पारस कूल की ओर जाकर वहां के 96 शक राजाओं को प्रतिबोध देकर गर्दभिल्ल पर चढ़ाई करवाई और उसको हराकर सरस्वती साध्वी को छुड़ायी। ये कालकाचार्य महाप्रभावक थे।

43-44 साम्ब और प्रद्युम्नः- ये दोनों श्रीकृष्ण के पुत्र थे। साम्ब की माता जम्बूवती थी और प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी थी। बाल्यकाल में अनेक लीलाएं करके, कौमार्यावस्था में विविध पराक्रम दिखलाकर, अन्त में वैराग्य को प्राप्त होकर दीक्षित हुए और शत्रुंजय पर्वत पर मोक्ष में गये।

45- मूलदेवः- राजकुमार मूलदेव संगीतादि कला में निपुण थे, किन्तु बहुत जुआ खेलनेवाले थे। पिता ने इनको देश निकाला दिया, तब वे उज्जयिनी में आकर रहने लगे। संगीत-कला से देवदत्ता नाम की गणिका तथा उसके कलाचार्य उपाध्याय विश्व भक्ति को इन्होंने पराजित कर दिया था। कुछ समय के पश्चात दान के प्रभाव से ये हाथियों से समृद्ध विशाल राज्य तथा गुणानुरागिणी कलाप्रिय चतुर गणिका देवदत्ता के स्वामी हुए। अंत में सत्संग होने से वैराग्य उत्पन्न हुआ और चारित्र का पालन कर स्वर्ग में गये। वहां से च्यवित होकर मोक्ष को प्राप्त होंगे।

46-प्रभवस्वामीः- ये पूर्वोक्त श्री जम्बुस्वामी के यहां लग्न की पहली रात को पांच सौ चौरों के साथ चोरी करने गये, वहां नवपरिणीत आठ बंधुओं के साथ परस्पर चलते हुए आध्यात्मिक संवाद को सुनकर प्रतिबुद्ध हुए और सब चोरों के साथ दीक्षा ग्रहण की। फिर जम्बुस्वामी ने शासन का भार इनको संभलाया। ये चौदह पूर्व के जानकार थे।

47-विष्णुकुमारः- इनके पिता का नाम पद्मोत्तर और माता का नाम ज्वालादेवी था। इन्होंने श्री मुनिसुव्रत आचार्य से दीक्षा ग्रहण की और तप के प्रभाव से अपूर्व लब्धिवाले हुए। एक समय पहले बाद में हारे हुए धर्मद्वेषीनमुचि प्रधान ने द्वेष बुद्धि से जैन साधुओं को राज्य की सीमा से बाहर निकालने की आज्ञा की। इस बात की जानकारी होते ही ये जैन साधुओं की सहायता करने आये और नमुचि से केवल तीन पग जमीन की मांग की, उसने देना स्वीकार किया। तब क्रूद्ध विष्णु मुनि ने एक लाख योजन का विराट शरीर बनाकर एक पांव समुद्र के पूर्व-भाग पर और दूसरा पांव समुद्र के पश्चिम भाग पर रखा। ''तीसरा पांव कहां रखूँ'' यह कहकर वह पांव नमुचि के मस्तक पर रखा जिससे वह मरकर नरक में गया। देव, गंधर्व, किन्नर, देवांगना आदि की उपशम रसमय मधुर संगीत प्रार्थना से अन्त में क्रोध शांत हुआ। फिर तपश्चर्या करते हुए और शुद्ध चारित्र का पालन करते हुए मोक्ष में गये।

48- आर्द्रकुमारः- ये अनार्य देश में आये हुए आर्द्रक देश के राजकुमार थे। इनके पिता आर्द्रक और श्रेणिक राजा की परस्पर गाढ़मैत्री थी, इस कारण अभयकुमार और आर्द्रक राजा के पुत्र आर्द्रकुमार की भी मैत्री हो गयी थी। एक समय अपने मित्र को जैन धर्म प्राप्त कराने के लिये अभयकुमार द्वारा प्रेषित जिन प्रतिमा के दर्शन होने से जाति स्मरण ज्ञान हुआ और आर्य देश में आकर इन्होंने दीक्षा ग्रहण की। यह दीक्षा वर्षो तक पालने के पश्चात भोगावली कर्म का उदय होने से इनको संसारवास स्वीकृत करना पड़ा और बालक के स्नेह बन्धन से मुक्त होने के लिये बारह वर्ष व्यतीत करने पड़े। तदनन्तर इन्होंने फिर से दीक्षा ली और अनेक जीवों को प्रतिबोध दिया। इन्होंने गोशालक के साथ धर्म चर्चा करके उसको निरुत्तर किया था। **(आगे और भी है...!)**

संसारी जीव के सात सुख ?:- *1- निरोगी काया, 2- कर्ज रहित, यात्रा के सिवाय परदेश गमन नहीं हो, 4- स्त्री सुपात्र हो, 5- पुत्र आदि का सुख हो, 6- संबंधी पक्ष में हो, 7- प्रतिष्ठा हो।*

चार्तुमास पूर्ण : कार्तिक पूर्णिमा के बाद विहार का विधान

साधु की नवकल्पी विहार चर्या है।

चार्तुमास का चार मास का काल पूरा होता है, कार्तिक पूर्णिमा को और साधु साध्वी भगवंतों के लिये एक स्थान पर रुकना भगवान की आज्ञा विरुद्ध है। चार माह तक एक ही जगह रहने से लोगों के दिल में संतों के प्रति आस्था भाव के साथ अनुराग भाव पैदा होने लगने की संभावना बलवति हो जाती है। एतदर्थ एक ही स्थान पर रुकने का विधान न होने से कार्तिक पूर्णिमा चातुमार्सिक विदाई के क्षण होते है। अबाल वृद्ध सबकी आंखें नम होकर अविरल अश्रुधारा बहने लगती है।

साधु-संतों की नवकल्पी विहार चर्या होकर वायु के समान अप्रतिबद्ध विहारी होने से उन्हें मान मनोहार करके रोकना असंभव है। वे अपने कल्प के अनुसार ही रुकते और कल्प के अनुसार ही विहार करते है। कल्प से अधिक और कम विहार नहीं करते है। चार्तुमास के अलावा 29 दिन साधु और 58 दिन से अधिक साध्वी भगवंत का ठहरना चाह कर भी नहीं होता है। इस कल्प को ध्यान में रखकर सभी स्थानों पर मृगशीर्ष माह की एकम को सभी साधु संत विहार कर देते हैं।

विहार की व्यवस्था त्रेकालिक के हित को देखकर की गई है और इसमें संतों का हित छिपा रहता है। कहा भी है-

बहना पानी निर्मला पड़ा गंदेला होय।
साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय॥

बेहतर जल तो नदी का ही होता है। विचरणशील साधु नदी के जल सा होता है। विहारचर्या से दोष उत्पन्न नहीं होते, क्रियाओं में शिथिलता नहीं आती। मोह ममत्व की काई जमा नहीं होती। संयम विशुद्ध होता है।

एक ही स्थान पर रहने से उपकरणों की वृद्धि एवं आसक्ति का परिग्रह भाव में भी बढ़ोत्तरी होना संभव है। एक ही जगह पर रहने से श्रम की कमी और पौष्टिक आहार करने से शरीर में रक्त, मांस, चर्बी बढ़जाने से विकारोत्तेजना की अभिवृद्धि हो जाती है। एक ही स्थान पर रहने से लोगों में संतों के प्रति आस्था और आदर भाव घटकर राग-द्वेष की भावनाएं बढ़ने की संभावना को भी नकारा नहीं जा सकता। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा भी है-

✻ शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

एग एव चरे लाढ़े, अभिभूय परीएहे।
गामे वा णगरे वावि, निगमे रायहाणिये॥

साधु जीवन की विभिन्न चर्याओं में प्रशंसित मुनि परीषहों को पराजित करता हुआ एकाकी (राग-द्वेष रहित) ही ग्राम, नगर, निगम अथवा राजधानी में विचरण करें।

असमाणो चरं भिक्खू नेव कुज्जा परिग्गहं।
असंत्ततो गिहत्थेहिं अणिएओ परिलए॥

भिक्षु असमान होकर विहार करें। ग्राम, नगर आदि में आहारादि किसी पदार्थ में ममत्व वृद्धि रुप परिग्रह न करें। वह गृहस्थों से असंसक्ता होकर रहे तथा सर्वत्र अनिकेत (गृह बंधन से मुक्त) रहता हुआ परिभ्रमण करें।

एक स्थान पर रहने की साता और सुविधा लक्ष्य से हटने को प्रेरित कर ऐन्द्रिय सुख में मग्न करने का कारण बनती है, जबकि विहार में दुःख सहेत लक्षण स्मरण में रहकर यह चिन्तन बना रहता है कि दुःखों से मुक्ति होते ही मोक्षमुक्ति मार्ग प्राप्त होगा।

उत्तराध्ययन सूत्र के 32 वें अध्ययन में कहा है-

अगर अपने से अधिक गुणवाला अथवा समान गुणवाला निपुण साथी न मिले तो पापों का वर्जन करता हुआ तथा काम भोगों में अनासक्त होकर अकेला ही विचरण करें किन्तु सहायक न होने पर बैठे नहीं, विचरणशील रहे। उपनिषदों में भी कहा है- ''चरैवे तिन्चरैवेति'' चलते रहे।

''नमो अरिहंताणं''

✻अरिहंत मंगलमय है। जैन-शासन का बुनियादी मंत्र ''नमो अरिहंताणं'' है।

''नमो अरिहंताणं'' समर्पण भाव है।

यहां पहले ''नमो'' के तत्पश्चात् ''अरिहंत'' है। अरिहंत में नहीं।

''नमो'' में देने की शक्ति है।

''नमो'' अर्थात् भक्ति ! समर्पण !

अरिहंत तब ही फलदायी बनते हैं, यदि आप नमस्कार करो।

यह संदेश आपको काम आ सकता है....

सूरत, गुजरात से मुंबई के राजमार्ग पर सूरत से 78 कि.मी. वलसाड़ से 16 कि.मी. (सूरत की तरफ) पर वाघलधारा गांव है। राइट हैंड साइड पर आपको ''श्री प्रभव हेम कामधेनु गिरीविहार ट्रस्ट, पालीताना संचालित **''श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल कैंसर हॉस्पिटल''** की कमान दिखाई देगी। हजारों चोरस मीटर में फैला फल, फूल खेत से हराभरा ये संकुल कोई आश्रम से कम नहीं। यहां अति सुंदर जैन मंदिर एवं विशाल भोजनशाला भी है और यहां की गौशाला में करीब 400 देशी गाय है। यहां कैंसर के मरीज एवं एक साथी को 10 दिन उपचार एवं ट्रेनिंग के लिए रखा जाता है। 80 बेड उपलब्ध है। नास्ता, लंच और डिनर के समय मरीज से मिल सकते हैं।

सुबह 9 बजे आपको सिर्फ 50 रुपये केस निकलवाना है। अपने साथ मरीज की केस फाईल एवं अगर ऑपरेशन, केमो कारवाई हो तो वो साथ ले जानी है। सुबह 10.30 से 12.30 और दोपहर 3.30 से 5.30 दरमियान डॉक्टर द्वारा दर्दी की जांच के बाद 10 दिन के लिए एडमिट किया जाता है। केवल मरीज एवं एक साथी को ही प्रवेश की अनुमति है। ऐसी स्थिति में मरीज को बिलकुल मुफ्त एवं साथी को 11 दिन के लिए केवल 33 रुपये में रोज सुबह नास्ता, लंच एवं डीनर के लिए 33 कूपन दिये जाते है, बस और कोई खर्च नहीं। रुपये 1000/- की डिपॉजिट देनी होती है जो 11 वें दिन रसीद दिखाने पर वापस मिल जाती है। (10 दिन से पहले निकलने पर डिपॉजिट वापस नहीं मिलती)।

✻ सुबह 5.30 बजे योग, प्राणायाम, 7 बजे गाय के गोबर,गौमूत्र,गाय का दूध,दही, घी से बना पंचगव्यमिश्रण।

✻ 9 बजे गौमूत्र के साथ आयुर्वेदिक टेबलेट्स।

✻ 9 से10 बजे शरीर के कैंसरग्रस्त भाग में गोबर, गौमूत्र का लेप लगाकर धूप में बैठना।

✻ 10 बजे काढ़ा (उकाला)।

✻ 11 से 1 बजे के बीच लंच, लंच के बाद आयुर्वेदिक टेबलेट्स।

✻ 2 से 3 बजे सभागृह में दर्दी के खानपान एवं उपचार के लिए सवाल जवाब, चर्चा।

✻ 3.30 काढ़ा (उकाला)।

✻ 5 से 6 बजे के बीच सायंकाल भोजन, उसके बाद आयुर्वेदिक टेबलेट्स।

✻ 8 बजे से 9.30 बजे तक सत्संग, कीर्तन और बाद में मरीज को दूध।

यही दिनचर्या 10 दिन जारी रहेगी। 11 वें दिन आप 1 महिने की दवाई (करीब 2500/- से 4000/- रुपये की) लेकर अपने घर लौट सकते है और घर पर ठीक यहां की तरह कम से कम एक साल बताये गये परहेज के साथ उपचार करना है। महिने, दो महिने पर दवाईयां लेने जाना है।

अहम ध्यानाकर्षित बातें:-

✻ करोड़पति हो या रोड़पति, सब के लिए समान व्यवहार, एक समान नियम।

✻ कोई वीआईपी कल्चर नहीं।

✻ अति निष्ठावान, प्रमाणिक मिलनसार, सेवा भावना में लीन स्टाफ।

✻ डॉक्टरों एवं स्टाफ साथ में ही समान खाना खायेंगे।

✻ तीन समय की सभा, सत्संग एवं भोजन समय मोबाईल के उपयोग पर प्रतिबंध।

✻ 8 वें दिन अगर आपकी इच्छा हो या अनुकूल हो तो यहां की ऑफिस से प्रमाणित फार्म दिया जाएगा। आपको ये फार्म और मरीजऔर आपका आधार कार्ड ले कर केवल 17 कि.मी. वलसाड़ रेल्वे स्टेशन जाना है, मरीज की टोटल फ्री और साथी की 50 प्रतिशत डिस्काउण्ट पर कन्फर्म टिकिट मिल जाएगी। एक महिने के बाद एक बारआने, जाने के लिए भी फार्म साथ में ले आने पर यह सुविधा प्राप्त होगी।

टाटा हॉस्पिटल एवं देश की बड़ी-बड़ी हॉस्पिटल में लाखों रुपये बरबाद करके मृत्यु के समीप पहुंचे हुए मरीज थक, हार के सैकड़ों की संख्या में यहां आशा के साथ आ रहे है।

रास्ते में गौ माता का दर्शन होता है शुभ

यदि आप घर से किसी शुभ कार्य के लिए निकल रहे हैं और रास्ते में आपको गौ माता के दर्शन हो जाते है तो आप अपने कार्य में अवश्य सफल होंगे। उस समय यदि गाय की आवाज भी सुनाई दे जाए तो इससे सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

संविधान बनाने में जैनों का योगदान

राजनीतिक कारणों से भारत के संविधान के निर्माता के रुप में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को प्रचलित कर रखा है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि दलित समाज से आते थे और दलित वर्ग उनको भगवान की तरह पूजने भी लगा है। उनके स्मृति दिवस को भी ''महापरिनिर्वाण दिवस'' के रुप में मनाया जाता है। सभी पार्टियों की मजबूरी है कि जय-जय बाबा साहेब अंबेडकर कहते रहें।

सच ये है कि संविधान निर्माता समिति (संविधान सभा) में 299 सदस्य थे। कई समितियां थी। डॉ. अंबेडकर भी प्रारुप कमेटी के अध्यक्ष थे, पर संविधान बनाने का सारा श्रेय उनके ही खाते में गया। संविधान सभा लगभग 3 वर्ष (2 वर्ष, 11 महीने, 17 दिन) कार्यरत रही थी, तब कहीं जाकर संविधान का मसौदा तैयार हो सका था। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि संविधान बनाने वाली संविधान निर्माता समिति में ''6 जैन विद्वान'' भी शामिल थे। संविधान निर्माण कार्य में इनकी विशेष भूमिका रही है। जिसके लिये जैन समाज गौरवान्वित हैं।

श्रीमान रतनलाल जी मालवीय, (मलैया)
सागर (म.प्र.)
श्रीमान अजित प्रसाद जी जैन
सहारनपुर (उ.प्र.)
श्रीमान कुसुमकांत जी जैन
झाबुआ जिला (म.प्र.)
श्रीमान भवानी अर्जुन खीमजी
कच्छ (गुजरात)
श्रीमान बलवंतसिंह जी मेहता
उदयपुर (राजस्थान)
श्रीमान चिमनभाई शाह, सौराष्ट्र (गुजरात)

संविधान सभा के अंतिम दिन 24 जनवरी 1950 को सभी सदस्यों के हस्ताक्षर हुए। संविधान की तीन प्रतियां- एक हस्तलिखित अंग्रेजी में, एक छपी अंग्रेजी में व एक हस्तलिखित हिन्दी की प्रति पर सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर किये। पूरी प्रति चित्रों से सुसज्ञित की गई। चित्रों के माध्यम से क्रमशः पूरा इतिहास दर्शाया गया। प्रथम पृष्ठ पर मोहन जोदड़ो से प्राप्त उस सील को दर्शाया गया है, जिस पर एक बैल अंकित है। पृष्ठ 63 पर भगवान श्रीमहावीर का चित्र अंकित है। पृष्ठ 151 पर महात्मा गांधी को तिलक करती एक महिला चित्रित है, जो गांधीजी की दांडी यात्रा के समय का है। ध्यातव्य है कि गांधीजी की दांडी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व श्रीमती सरला देवी साराभाई (जैन) ने किया था।

गिरिराज महिमा

✻ आकाश में जैसे सूर्य चमकता रहता है वैसे 14 राज लोक में सिद्धगिरी तीर्थ हमेशा दिप्तीमंत है।

✻ गिरिराज पर कुल 3,507 छोटे-बड़े जिनालय हैं।

✻ गिरिराज पर कुल 27,007 जिनबिंब विराजित है।

✻ गिरिराज पर कुल 1500 चारण पादुकाएं है।

✻ गिरिराज की हाईट कुल 2000 फ्रीट है।

✻ गिरिराज का घेराव कुल 7 1/2 माईल है।

✻ गिरिराज की यात्रा का मार्ग कुल 2 माईल 2 फर्लांग है।

✻ गिरिराज पर कुल 3,745 सीढ़ियां है।

ये दोष तेरे में तो नही

जर्मनी की महान विचारक रोजा लेक्जेम्बर से लोगों ने कहा कि उनके विरुद्ध समाचार पत्रों में जो कुछ असहनीय अनर्गल छापा गया है, वे उसका प्रतिरोध-प्रतिवाद क्यों नहीं करती। इस तरह चुप बैठे रहने से तो लोगों के मनों में तरह-तरह की शंकाएं-कुशंकाएं घुमड़ रही है।

रोजा लेक्जेम्बर ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि जब वे छोटी थी तब उनके पिता ने एक बात कही थी जिसे वे आज तक नहीं भूलती कि जो अकारण दूसरों के दोष देखता है और उंगली उठाने का यत्न करता है उसे ज्ञात ही नहीं होता कि दूसरों की ओर तो मात्र एक उंगली ही उठाई गई है, तीन उंगली तो स्वयं उसकी ओर रहकर संकेत करती है कि पहले तू अपनी ओर देख, कहीं ये गलतियां, ये दोष तेरे में तो नहीं।

गंगसेन एवं गंगाराम (अनर्थ दंड)

अलवर नगर में रुपसेन राजपुरोहित रहता था। उसके दो पुत्र थे। दोनों के नाम गंगसेन और गंगाराम थे।

राज पुरोहित रुपसेन चिदानंद राजा का सहपाठी था। राजा की रुपसेन से गाढ़प्रीति थी। रुपसेन पर राजा के चार हाथ थे। राजा किसी न किसी बहाने रुपसेन के घर धन भिजवाता रहता था। राजा की कृपा दृष्टि के कारण रुपसेन धनाढ्य था। रुपसेन न्यायनीति पूर्वक व्यवहार चलाता था। वह दूसरों को भी न्याय नीति से व्यवहार चलाने का धर्मोपदेश देता था। निष्कारण अपनी आत्मा दंडित हो। ऐसे किसी भी कार्य से स्वयं दूर रहकर अनेक आत्माओं को दूर रहने का उसका उपदेश सार्थक था।

रुपसेन की दोनों पुत्रों पर पूर्ण प्रीति थी। वह दोनों पुत्रों को अनर्थ दंड से बचने हेतु हित शिक्षा दिया करता था।

गंगाराम पिता के वाक्यों पर,वचनों पर चिंतन मनन करता था। वह अपने आपको चारों प्रकार के अनर्थ दंड से बचाने का प्रयत्न करता था। गंगसेन को पिता की बातें अप्रिय लगती थी। रुपसेन जैन धर्म को पालता था। गंगाराम को भी जैन धर्म के प्रति प्रगाढ़ रुचि थी। गंगसेन धर्म के सिद्धांत का कट्टर विरोधी था। उसे किसी भी धर्म के प्रति प्रीति नहीं थी। वह तो एक ही बात मानता था कि मानव भव बड़ी मुश्किल से मिला है। इस भव में तो खाओ-पीओ और मौज करो। यही सिद्धांत अपनाना चाहिये।

रुपसेन का आयुष्य अल्प था। उसको आयुष्य की अल्पता का अनुमान लग गया और उसने अंतिम तीन दिन का अनशन किया। चारों आहार के त्याग के साथ स्व-शरीर और सारी भौतिक संपत्ति को भी वोसिरा दी। समाधिपूर्वक आयुष्य पूर्ण किया। पिता का क्रिया कर्म हो जाने के बाद दोनों भाई अलग-अलग रहने लगे।

गंगसेन बड़ा था, पर राजा ने गंगाराम के गुणों से आकर्षित होकर राजपुरोहित पद गंगाराम को दिया। गंगसेन गंगाराम के प्रति द्वेष भाव रखने लगा। बाहर से तो वह स्नेह युक्त व्यवहार करता था पर उसके अंतर में विद्वेष की आग सुलग रही थी।

गंगाराम जैन मुनियों के संपर्क में आने लगा। शनैः शनैः वह बारह व्रतधारी श्रावक बन गया। पिताजी एवं गुरुदेवों की हित शिक्षा के अनुसार वह स्वयं को अनर्थ दंड से बचाये रखता था।

गंगाराम प्रमादाचरण से दूर रहता था, किसी के वियोग में शोक संताप नहीं करता था, वह अल्प निद्रा लेता और किसी भी प्रकार की विकथाओं में भाग नहीं लेता था, राजसभा में आवश्यकता से अधिक शब्दोच्चार भी नहीं करता था। गृहस्थाश्रम को कैदखाना मानकर सांसारिक क्रियाकांड में अल्पातिअल्प रुप में लिप्त होता था। वह गृहस्थ प्रायोग्य कषायों से दूर रहने हेतु प्रयत्नशील था। मद्यपान की तो अपने राज्य में राजा के द्वारा निषेधाज्ञा प्रसारित करवा दी थी। इस तरह गंगाराम पांचों प्रकार के प्रमाद से दूर रहने में प्रयत्नशील था। हिंसक उपकरण (यथा कुहाड़ आदि) वह किसी को नहीं देता था।

गंगाराम किसी के घर तभी जाता था, जब जाना आवश्यक होता। अनावश्यक रुप से किसी को कुछ कहता नहीं था। पापोपदेश का तो उसके जीवन में प्रश्न ही नहीं था। स्वजन संबंधियों के लग्न प्रसंगादि में माध्यस्थ भाव से ही भाग लेता था। गंगाराम का जीवन अनुकरणीय बन गया था।

राजा गंगाराम से अत्यंत संतुष्टथा। राजा ने अपने राज्य में नाटकों पर प्रतिबंध लगा दिया था। विशिष्ट प्रसंगों पर ही अनुमति दी जाती थी।

गंगसेन गंगाराम से सर्वथा विपरीताचरणवाला मनुष्य था। गंगसेन पांच द्रम के खो जाने पर भी शोकाकुल हो जाता था। पांचों प्रकार के प्रमाद के सेवन में वह आसक्त था। मदिरा पान सहित सातों व्यसनों का सेवन सहज रुप से करता था। उसे कोई ग्लानि नहीं थी। उसने अपने घर में दूसरों को देने के लिए अनेक प्रकार के हिंसा के उपकरण संग्रहित किये थे। लोगों से कहता फिरता था मेरे घर चाकू है, छूरी है। जो चाहिये सो उपकरण है। आपको आवश्यकता हो उस समय लेने आ जाना, मांगने आने पर हर्षित होकर उसे देता था। उसकी वाचालता इतनी अधिक थी कि निष्कारण दूसरों के घरों में जा-जाकर घर बनाने का, वाहन लाने का, पुराने टूटे-फूटेको मरम्मत करने का, संबंध जोड़ने आदि का उपदेश देता रहता था। हंसी, मजाक एवं कामोत्तेजक चेष्टा में तो गंगसेन प्रवीण था।

नाटक व नृत्यादि कार्यक्रम चोरी छिपे जहां चलते थे, वहां गंगसेन आवश्यक जाता था। मदिरा पान में मस्त बनकर कुछ मित्रों के साथ नर्तकी के नृत्य देखने के लिए जाता रहता था। पापानुबंधी पुण्योदय से लक्ष्मी तो उसके पास थी ही उसे मित्रों के संग नर्तकी, वैश्यागमन आदि में उत्साह पूर्वक खर्च करता रहता था।

एक दिन गंगसेन मदिरा में धत्त बना हुआ अपने मित्रों के साथ नर्तकी का नृत्य देखने में तल्लीन था। वहां उनका किसी के साथ कलह हो गया। सिपाही उनको पकड़कर राजा के पास ले गये। राजा ने उनको कैद में डालने की आज्ञा दे दी।

गंगाराम को समाचार मिलते ही वह राजा के पास आया। राजा से अपने बड़े भाई गंगसेन को मुक्त करने हेतु विनति की। राजा ने कहा- ''गंगाराम ! दूराचरण सेवियों को सजा अवश्य होनी चाहिये। तूं उन्हें मत छूड़ा।''

गंगाराम ने कहा- ''मेरा बड़ा भाई है। एक बार आप छोड़दीजिए। मैं इन सबको समझाऊंगा।'' गंगसेन व उनके मित्रों को छोड़ दिया गया। गंगाराम ने उसे समझाने का पूर्ण प्रयत्न किया। थोड़े दिन तक तो गंगसेन व उसके साथी शांत रहे पर कुत्ते की पूंछ जैसे टेढ़ी ही रहती है, वैसे वे भी सुधर नहीं सके।

गंगसेन ने पुनः मदिरापानादि में मस्त बनकर नाटक नृत्य के लिए नर्तकी के पास जाना प्रारंभ किया। गंगसेन ने चार नर्तकियां खरीद ली और नर्तकियों के पास नाच गान करवाकर धनार्जन करना प्रारंभ कर दिया।

नगर के विलासी नवयुवक वहां आते थे। नर्तकी स्वयं अपने हाथों से मदिरा पान करवाती थी। उसके हाथ से जाम पीकर प्रेक्षक रुपयों की वर्षा कर देते थे। एक धनाढ्य नवयुवक ने एक नर्तकी के हाथों अधिक मदिरा पी ली। वह बहक गया और नर्तकी का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचने लगा। गंगसेन को यह अनुचित लगा। गंगसेन भी नशे में था। उसने नवयुवक को डांटा। बात बढ़गई और दोनों में मारा मारी हो गई। नवयुवक को क्रोध चढ़ा उसने कमर से कटारी निकालकर धर-से गंगसेन के पेट में घुसेड़दी। गंगसेन की मृत्यु उसी समय हो गई। दुर्गति का अतिथि बना।

गंगाराम उसकी मृत्यु को देखकर संसार की क्षण भंगुरता, असारता समझ गया। उसके हृदय में वैराग्य के भाव प्रकट होने लगे। चारित्रावरणीय कर्म टूटने लगा।

श्री जयघोषसूरीश्वरजी के पास चारित्र ग्रहण कर गंगाराम आत्मसाधना में लीन बन गया। निरतिचार चारित्र पालनकर सद्गति का उपभोक्ता बना।

विनय-प्रशम बिना शोभा कैसी....

कुल-रुप-वचन-यौवन-धन- मित्रै-श्वर्य सम्पदमपि पुंसाम्।
विनय-प्रशमविहीना न शोभते निर्जलेव नदी॥

- श्री प्रशमरति प्रकरण

अर्थात्- व्यक्ति के कुल-रुप-यौवन-धन-मित्र-ऐश्वर्य और संपत्ति भी यदि विनय और प्रशम से रहित हो तो शोभा नहीं देते, जैसे बिना जल की नदी।

मुक्ति का संकेत

किसी नगरसेठ के द्वार पर एक प्रसिद्ध गुरु का शिष्य भिक्षा मांगने पहुंचा। वह जब भिक्षा लेकर लौटने लगा तो वहां पिंजरे में कैद तोता उससे बोला- ''इस पिंजरे में कैद होने के कारण मैं बहुत व्यथित रहता हूं। कृपया अपने गुरु से पूछकर मेरी स्वतंत्रता का उपाय बताइए।''

वापस लौटकर शिष्य ने तोते की जिज्ञासा अपने गुरु के सम्मुख रखी। तोते का प्रश्न सुनते ही गुरु समाधि में लीन हो गए और ऐसा लगा, जैसे उन्होंने प्राणों का त्याग ही कर दिया हो। बहुत अवधि तक वे इसी अवस्था में रहे तो शिष्य घबरा गया। इसलिए उनके चैतन्य होने पर उसने दोबारा वह प्रश्न पूछना उचित न समझा।

अगले दिन उसने नगर सेठ के यहां जाने पर यह सारा विवरण तोते को कह सुनाया। सारी बात सुनते ही तोता- ''आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आज आपने मुझे मेरी मुक्ति का मार्ग दिखा दिया।'' ऐसा कहकर तोते ने गहरी सांस ली और प्राण त्याग दिये। यह सारा घटनाक्रम शिष्य के लिए अचरज भरा था। उसने लौटकर पूर्ण विवरण अपने गुरु को बताया और उनसे उसकी जिज्ञासा का निराकरण करने के लिए कहा।

गुरु ने उत्तर दिया- ''पुत्र! वह तोता साधारण आत्मा नहीं था। पूर्वकृत कर्मो के कारण उसे पक्षी योनि में जन्म लेना पड़ा, परन्तु वह पहले ही साधना की ऊँचाईयों को प्राप्त कर चुका था। आवश्यकता मात्र उसे संकेत देने की थी, जिससे वह मुक्ति को प्राप्त कर सके। मेरे जीवित रहते मृतवत् समाधि प्राप्त करने का संदेश मिलते ही उसे अपने अंदर निहित क्षमता का बोध हो गया और वह योगमार्ग से समाधि को प्राप्त हो गया।'' शिष्य की जिज्ञासा का समाधान हो गया।

पांचवां आरा

21000 हजार वर्ष का यह पंचम आरा है उसमें से 2051 वर्ष पूरे हो चुके है। 21000-2051=18949 वर्ष बचें हैं, पांचवां आरा पूरा होने में। इस पंचम आरे को कलयुग कहा है। इस युग में जीने की इच्छा से देवता भी धरती पर आना चाहते है पर नहीं जनम ले सकते है क्योंकि कलयुग केवल नाम आधारा, अगर प्रभु का स्मरण भाव से व केवल नाम का भी रटन मात्र से इन्सान भव तिर जायेंगे। मगर वो भी मन इन्सान के पास नहीं होगा सो देवता धरती पर आकर क्या करेंगे। साल बितते वक्त नहीं लगता। समय जैसे पंख लगाकर बैठा है, पलक छपकते ही बीतता जा रहा है और हमारी मात्र 100 वर्ष की आयु कहां बीत जाती है इन्सानों को पता भी नहीं चलता। 84 अवतारों में जन्म लेने के बाद ऐसा दुर्लभ मानव भव हमें नसीब में मिलता है और अगर इस भव में आकर मानव होने का महत्व नहीं समझा तो मनुष्य और पशुओं में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा। जीवन को सार्थक बनाना ही मनुष्यों का प्रथम कर्त्तव्य है। अब इस कलयुग के अंतिम पड़ाव में हम पहुंच चुके हैं। युग परिवर्तन के साथ-साथ इस धरती पर कई परिवर्तन होंगे जो मनुष्य खुद ही महसूस करेंगे, सिर्फ जैन धर्म के शास्त्रों में जो सच्चाई गणधरों के द्वारा लिखी जाती है वो कभी गलत नहीं होती सो शास्त्र पर विश्वास रखने वाले प्रत्येक जीव अपना उद्धार खुद ही कर सकते हैं इसमें कोई दोहराय नहीं, आईये आज जानते है, इस धरती पर आने वाले समय में क्या-क्या परिवर्तन होंगे और इस धरती का विनाश कैसे होगा। कौन बचेगा और नई सृष्टि का निर्माण किस प्रकार होगा ? बड़े विचरणीय प्रश्न है ? जानिएः-

पंचम आरे में होनेवाली घटनाएंः-

✻ शहर गांव जैसे होंगे ! ✻ गांव श्मशान जैसे होंगे।

✻ सुखी जीवन निर्लज्ज बनेंगे।✻ कुलवान नारियां वेश्या जैसी बनेगी ✻ साधुओं कषायवंत होंगे। ✻ राजा यमदंड जैसे होंगे।✻ कुटुंबीजन दास सरीखें होंगे।✻ प्रधानों लोभी सरीखें होंगे।✻ पुत्रों स्वच्छन्दाचारी होंगे।✻ शिष्यों गुरु का अपमान करने और सामने बोलने वाले होंगे।✻ दुर्जन पुरुषों सुखी होंगे।✻ सज्जन पुरुषों दुःखी होंगे। ✻ देश दुकाल की समस्या से घिरा होगा।✻ पृथ्वी खराब तत्वों, दुष्टतत्वों से आकुल व्याकुल होगी। ✻ ब्राह्मण अस्वाध्यायी अर्थ लुब्ध बनेंगे, विद्या का व्यापार होगा।✻ साधुओं गुरु की निश्रा में नहीं रहेंगे।✻ समकित दृष्टिदेव और मनुष्य,अल्पबल वाले होंगे ✻ मनुष्य को देव के दर्शन नहीं होंगे।✻ गोरस रसहीन-कस्तुरी आदि वर्ण प्रभावहीन होंगे ✻ विद्या, मंत्रों तथा औषधियों का प्रभाव अल्प होगा।✻ बल, धन, आयुष्यहीन होंगे। ✻ मासकल्प योग्य क्षेत्र नहीं रहेंगे।✻ श्रावक की ग्यारह प्रतिमा का विच्छेद होगा।✻ आचार्यो, शिष्यों को नहीं पढ़ाएंगे।✻ शिष्य कलह और लड़ाई करनेवाले होंगे। ✻ मुंडन करनेवाले साधु कम होंगे, दीक्षा लेगें, पर पालन कम करने वाले होंगे। ✻ आचार्यो अपनी-अपनी अलग समाचारी प्रगट करनेवाले होंगे।✻ म्लेच्छों (मोगल) के राज्य बलवान होंगे। ✻ आर्यदेश के राजाओं अल्प बलवाले होंगे।✻ मिथ्या दृष्टिदेव बलवान होंगे ✻ झूठ-कपट का बोलबाला होगा और बढ़ता जायेगा।✻ सत्य बोलनेवाले की हार होगी। सत्य बोलना निष्फल होगा। ✻ अनिती करनेवाले लोगों की आपस में एक दूसरे से खूब बनेगी।✻ धर्म करने वालों की संपूर्ण सफलता नहीं मिलेगी।✻ किसी के लग्न किसी के भी साथ होंगे। जाती-पाती का कोई भेदभाव ही नहीं रहेगा। ✻ अभी पंचम आरा चालू हो चुका है।

पांचवां आरे के अंत मेंः-

✻ पंचम आरे के अंत में आचार्यश्री, दुप्पसहसूरी और साध्वी श्री फाल्गुनी होंगे। ✻ श्रावक श्रीनागील और श्राविकाश्री,सत्य की होगी। ✻ राजा श्री विमलवाहन और शास्त्र दश वैकालिक सूत्र बचेंगा। ✻ प्रधानश्री सुमुख होगा। ✻ अग्नि की बारीश होगी।

भगवान ''श्री महावीर स्वामीजी'' ने कहा है किः-

✻ पंचम आरे के अंत में अंतिम साधु आचार्य श्री दुप्पसहसूरी। ✻ ओर अंतिम ''श्रावक श्री नागील'' और अंतिम ''श्री सत्यकी'' और ✻ अंति''साध्वी श्री फाल्गुश्री'' होगी, आचार्य श्री दुप्पसहसूरी, की आत्मा सम्यक्त्व धारण करेगी, जो इस पंचमआरे के अंत में✻ जन्म लेनेवाली एक मात्र सम्यक्त्व धारी आत्मा होगी, ✻ आचार्य श्री दुप्पसहसूरी के कालधर्म होने के पश्चात ✻ श्रावक श्रीनागील की मृत्यु होगी, उसके बाद साध्वी श्री फाल्गुश्री का कालधर्म होगा और अंत में '' श्राविका श्री सत्यकी का मृत्यु होगी इसी के साथ प्रभु श्री ''महावीर स्वामी'' के शासन का अंत होगा। ✻ प्रभु का अवतरण सिर्फ धर्म के रक्षार्थ ही होता है। ✻ जो धर्म की रक्षार्थ युगों-युगों में जन्म लेते आए हैं। ✻ अभी हम

सब प्रभु श्रीमहावीर स्वामीजी के शासनकाल में जीवनयापन कर रहे है। सब धर्मों का विच्छेद हो जायेगा सिर्फ जैन धर्म ही बचेगा और अंत में इस धर्म का भी विच्छेद हो जायेगा, उसी के साथ ये पृथ्वी पर भयंकर परिवर्तन होगा, इसलिए हे मानवमानों धर्म की रक्षा करो,धर्म हम सब की रक्षा करने वाला होगा। जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखने में आया हो तो मिच्छामि दुक्कड़म।

नींव:– *इमारतें उतनी ही ऊपर उठ पाती हैं, जितनी गहरी उनकी नींव होती है। नींव की गहराई पर ही भवन की ऊंचाई निर्भर करती है। यह ही बात पेड़ों के लिए भी लागू होती है। जड़ें गहरी हों तो पेड़ों को ऊंचा उठते, विशाल वृक्ष बनते देर नहीं लगती। यह सिद्धांत भारतीय जीवन एवं व्यक्तित्व पर भी उतनी ही सत्यता के साथ खरा उठता है।*

यदि जीवन का लक्ष्य ऊंचा एवं ध्येय महान हो तो अपने व्यक्तित्व को उतना ही धीर-गंभीर एवं मजबूत बनाना पड़ता है। उसकी क्षुद्रताओं व संकीर्णताओं को तिलांजलि देनी पड़ती है अन्यथा छोटी-मोटी घटनाएं ही व्यक्तित्व को धराशायी कर देने के लिए पर्याप्त होती है जबकि अपने व्यक्तित्व को गंभीर, परिपक्व व मजबूत बनाने वाले बड़े-से-बड़े घटनाक्रमों के सम्मुख जरा-सा भी नहीं घबराते हैं।

भवनों का निर्माण करना हो तो पहले नींव खोदनी पड़ती है। इसी प्रकार व्यक्तित्व निर्मित करने से पहले-ज्ञान, चिंतन चरित्र को गहरा, सुगठित व सशक्त बनाने का कार्य पूर्ण करना पड़ता है। जैसे गहरी नींव वाले भवन आंधी, तूफान व भूकंप के झटकों को सहजता से सहन कर जाते हैं- वैसे ही साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा के सूत्रों को आत्मसात् करने के बाद निर्मित हुए व्यक्तित्व, कितने भी कठिन से कठिन समय को सुगमता के साथ पार कर जाते हैं। व्यक्तित्व मजबूत बनाना हो तो मनोबल को भी मजबूत करना पड़ता है। मजबूत मनोभूमि ही सशक्त व्यक्तित्व की नींव कही जा सकती है।

एक बहुत लाजवाब पोस्ट

एक दिन कॉलेज में प्रोफेसर ने विद्यार्थियों से पूछा कि इस संसार में जो कुछ भी उसे भगवान ने ही बनाया है न ? सभी ने कहा- ''हां भगवान ने ही बनाया है।''

प्रोफेसर ने कहाकि -इसका मतलब ये हुआ कि बुराई भी भगवान की बनाई हुई चीज ही है।

प्रोफेसर ने इतना कहा तो एक विद्यार्थी उठ खड़ा हुआ और उसने कहा कि- इतनी जल्दी इस निष्कर्ष पर मत पहुंचिए सर।

प्रोफेसर ने कहा, क्यों ? अभी तो सबने कहा है कि- सब कुछ भगवान का ही बनाया हुआ है फिर तुम ऐसा क्यों कह रहे हो ? विद्यार्थी ने कहा कि सर, मैं आपसे छोटे-छोटे दो सवाल पूछूंगा। फिर उसके बाद आपकी बात मान लूंगा।

प्रोफेसर ने कहा, ''तुम संजय सिन्हा की तरह सवाल पर सवाल करते हो। खैर पूछो।'' विद्यार्थी ने पूछा, ''सर क्या दुनिया में ठंड का कोई वजूद है ?''

प्रोफेसर ने कहा, बिल्कुल है। सौ फीसदी है। हम ठंड को महसूस करते हैं।विद्यार्थी ने कहा- ''नहीं सर, ठंड कुछ है ही नहीं। ये असल में गर्मी की अनुपस्थिति का अहसास भर है। जहां गर्मी नहीं होती, वहां हम ठंड को महसूस करते हैं।''

प्रोफेसर चुप रहे।विद्यार्थी ने फिर पूछा, ''सर क्या अंधेरे का कोई अस्तित्व है ?''

प्रोफेसर ने कहा, ''बिल्कुल है। रात को अंधेरा होता है।''

विद्यार्थी ने कहा- ''नहीं सर। अंधेरा कुछ होता ही नहीं। ये तो जहां रोशनी नहीं होती वहां अंधेरा होता है।

प्रोफेसर ने कहा, ''तुम अपनी बात आगे बढ़ाओ।''

विद्यार्थी ने फिर कहा, ''सर आप हमें सिर्फ लाइट एण्ड हीट (प्रकाश और ताप) ही पढ़ाते है। आप हमें कभी डार्क एण्ड कोल्ड (अंधेरा और ठंड) नहीं पढ़ाते। फिजिक्स में ऐसा कोई विषय ही नहीं। सर, ठीक इसी तरह ईश्वर ने सिर्फ अच्छा-अच्छा बनाया है। अब जहां अच्छा नहीं होता, वहां हमें बुराई नजर आती है पर बुराई को ईश्वर ने नहीं बनाया। ये सिर्फ अच्छाई की अनुपस्थिति भर है।''

दरअसल दुनिया में कहीं बुराई है ही नहीं। ये सिर्फ प्यार, विश्वास और ईश्वर में हमारी आस्था की कमी का नाम है। जिंदगी में जब और जहां मौका मिले अच्छाई बांटिए। अच्छाई बढ़ेगी तो बुराई होगी ही नहीं।

बढ़े चलें आत्मसाधना के पथ पर

किसी शहर में मुनि भगवंत के सप्त दिवसीय सत्संग का आज आखिरी दिवस था। सत्संग का आखिरी दिन सत्संग में पधारे साधकों व जिज्ञासुओं की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के समाधान के लिये निर्धारित था। जब आज सत्संग में प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम आरंभ हुआ तब एक साधक ने प्रश्न किया- ''महात्मन् ! आप कहते हैं कि सांसारिक सुख अंततः दुःखदायी ही होते हैं, इसलिये इनके आकर्षण में मत पड़ो, पर इनके आकर्षण से कैसे बचें ?''

मुनि भगवंत बोले- ''वत्स ! आत्मकल्याण की आकांक्षा रखने वाले हर साधक को यह भली भांति समझ लेना चाहिये कि भौतिक सुख क्षणिक है। भौतिक विषयभोगों को भोगने के बाद भी इंद्रियां अतृप्त ही रहती है। भोगों की इच्छा जितनी भी बार पूरी हो जाए, वह अधूरी ही रहती है। वैसे ही जैसे अग्नि में घी की आहूतियां जितनी बार दी जाएं अग्नि उतनी ही अधिक और धधकती जाती है। वह अग्नि बुझने का नाम ही नहीं लेती।''

महात्मन् आगे बोले- ''भौतिक विषयभोगों से प्राप्त सुख की सीमा है एवं उस सुख का प्रभाव तात्कालिक व क्षणिक ही होता है। इसलिए इंद्रियां पुनः उसे पाने को व्यग्र रहती है। सामान्य भौतिक दृष्टिसम्पन्न व्यक्ति जीवन भर इंद्रियों के द्वारा वांछित व इच्छित भोगों की व्यवस्था बनाता रहता है, परन्तु जिनके पास आत्मदृष्टि है, जो ज्ञानी हैं वे जानते हैं कि आत्मा से निस्सृत आनंद से ही हमें स्थायी रुप से तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वे जीवन निर्वाह मात्र के लिये अनासक्त भाव से भौतिक साधनों का सदुपयोग भर करते हैं और आत्मा से अलौकिक आनंद निस्सृत हो सके इस हेतु वे अपनी आत्मा में परमानंद के स्रोत परमात्मा का निरन्तर ध्यान करते हैं।''

कुछ रुककर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई- ''आत्मा में परमात्मा का निरंतर ध्यान करते-करते अंततः आत्मा से ईश्वरीय आनंद प्रस्फुटित हो उठता है। आनंद का, परमानंद का अजस्र स्रोत उसके अंदर फूट पढ़ता है।''

महात्मन् ने आगे कहा- ''तब आत्मदृष्टि सम्पन्न हो जाने के कारण उसे यह भली भांति ज्ञात हो जाता है कि लुभावने और सुंदर दिखने वाले भौतिक विषयभोगों से मिलने वाले सुख क्षणिक होते हैं और अंततः ये हमें दुःख देने वाले आसक्त करने वाले एवं कर्मबंधन में बांधने वाले होते हैं। सामान्य जन लुभावने व आकर्षक दिखने वाले विषयभोगों के दुष्परिणाम को नहीं समझ पाने के कारण उनमें फंसकर, उलझकर रह जाते हैं। वे दुःख और बंधन में पड़ जाते हैं।''

उदाहरण स्वरुप वे कहने लगे- ''राजकुमार वर्धमान को संसार की सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध थी। अपनी युवावस्था में उन्होंने उन सुख-सुविधाओं का उपयोग भी किया, पर उनकी दृष्टि भौतिक विषयभोगों से मिलने वाले क्षणिक व तात्कालिक सुखों से हटकर उन भोगों से मिलने वाले दुष्परिणाम की ओर गई। इसलिए अंततः उन्होंने त्याग व तपस्या का मार्ग चुना। बरसों तक तप-साधना की और अंततः आत्मबोध के रुप में अपने लिए शाश्वत सुख व परमानंद का अजस्र स्रोत अपने अंदर ही ढूंढ लिया।''

उन्होंने आगे कहा- ''अस्तु मित्रों ! हमें भोगों के दुष्परिणाम व उनसे मिलने वाले क्षणिक सुख पर सतत विचार करना चाहिए व शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिए आत्मसाधना के पथ पर चल पड़ना चाहिए।'' तभी एक अन्य साधक ने प्रश्न किया- ''महात्मन् ! भौतिक सुख-साधनों के त्याग एवं तप-साधना के पश्चात भी यदि जीवन के अंत तक हमें आध्यात्मिक अनुभूति, परमानंद की अनुभूति न हो पाई तब क्या होगा ? तब तो ''माया मिली न राम'' जैसी बात हो जाएगी।''

इस प्रश्न को सुनकर मुनि भगवंत मुस्कराए और बोले- ''वत्स ! जैसे ऊष्मा मिलते ही बरफ का पिघलना सुनिश्चित है, वैसे ही सही माने में सही दिशा में पूर्ण श्रद्धा-विश्वास के साथ आत्मसाधना की गई तो परमानंद के रुप में उसका सुंदर परिणाम प्राप्त होना अवश्यंभावी है।''

अपनी बात स्पष्ट करते हुए वे बोले- ''आत्मसाधना के पथ पर चलकर ही अब तक अगणित साधकों ने आत्मबोध की प्राप्ति की है, परमानंद की प्राप्ति की है। अश्रद्धा, अविश्वास, असंयम, अधैर्य, संदेह एवं अनियमित रुप से की गई साधना ही असफल होती है। श्रद्धा, विश्वास, संयम, धैर्य संदेहरहित व नियमित रुप से दीर्घकाल यानी आत्मबोध की प्राप्ति होने तक की गई साधना ही अंततः सफल होती है।

इसमें कोई संदेह नहीं, पर हाँ, साधना करते-करते यदि इस क्षण भंगुर नश्वर भौतिक शरीर का अंत हो जाए तब भी साधकों को निराश होने की आवश्यकता नहीं। आत्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है।''

उन्होंने आगे कहा- ''साधक के द्वारा की गई साधना का संस्कार भी आत्मा स्वयं में संव्याप्त कर लेती है और पुनः नए शरीर में आ जाने पर साधक वहां से आगे की यात्रा, आगे की साधना पूर्ण कर पाता है। अस्तु उसके द्वारा पूर्व में की गई साधनाएं निष्फल नहीं होती, बल्कि उसे अगले जन्म में उससे आगे की साधना पूर्ण करने में सहयोगी बनती हैं। वे कह रहे थे कि अपने पूर्वजन्म के साधनात्मक संस्कारों के द्वारा कई लोग बचपन से ही त्याग और वैराग्य की भावदशा में होते हैं। बचपन से ही वे भगवद् उपासना, भजन, जप एवं ध्यान में डूबने लगते हैं।''

अब सत्संग समापन की ओर जा रहा था कि तभी एक अन्य साधक ने प्रश्न किया- ''महात्मन्! ऐसा कहा- जाता है कि साधकों को परदोषदर्शन नहीं करना चाहिये। ऐसा क्यों है और इससे कैसे बचा जा सकता है ?'' इस पर मुनि भगवंत बोले- ''वत्स ! तुमने बड़ा ही सारगर्भित प्रश्न किया है। परदोषदर्शन से, दूसरों की बुराई करते रहते से हम दूसरों के पाप का चिंतन करते रहते हैं। दूसरों के पाप का चिंतन करते रहने से हमारा चित्त एवं मन मलिन होने लगते हैं, जिससे चित्त साधना में नहीं लग पाता।''

वे बोले- ''इसके साथ ही हम पाप चिंतन करते-करते स्वयं भी उस रास्ते पर चल पड़ते हैं क्योंकि जो व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा ही करता है और वैसा ही बन जाता है। इसलिए आध्यात्मिक जीवन एवं आत्मकल्याण के आंकाक्षी साधकों को पाप चिंतन से बचना चाहिये एवं सतत सेवा, स्वाध्याय, परमात्म स्मरण, ध्यान करना चाहिये जिससे चित्त धुलता जाता है, परिष्कृत होता जाता है और चित्त परदोष दर्शन के प्रति अनाकर्षित व उदासीन होता जाता है।'' इतना कहने के साथ ही मुनि भगवंत का सत्संग समाप्त हुआ। उपस्थित साधकों, भक्तों, जिज्ञासुओं ने सत्संग में पाए अमृत को अपने हृदय में सहेजकर रख लिया व आत्म साधना के पथ पर चल पड़े।

सृजनः- *आध्यात्मिक प्रयासों की परिणति आत्मसत्ता के परमात्मसत्ता के साथ मिलन के साथ परिपूर्ण हो पाती है। आध्यात्मिक साधना में हमारे अस्तित्व में और परमात्मा के अस्तित्व में अंतर नहीं रह जाता। दोनों पर एक जैसा रंग चढ़ जाता है या यों कहें कि हमारा व्यक्तित्व भी परमात्मा के रंग में रंग उठता है। सुनने में-जानने में ऐसा होना अत्यंत आकर्षक लगता है, पर इसके साथ का सत्य यह भी है कि हमारे व्यक्तित्व पर ईश्वरीय उपस्थिति का रंग चढ़े, उसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे व्यक्तित्व की धुलाई हो सके।*

जिस प्रकार कपड़े पर नया रंग चढ़ाने के लिए, पहले उसकी गंदगी को धोना और फिर उस पर नया रंग चढ़ाना संभव हो पाता है- उसी प्रकार, मानवीय व्यक्तित्व पर दैवी अनुग्रह का रंग चढ़ाने से पहले व्यक्तित्व की धुलाई और रंगाई जरुरी हो जाती है। यहां धुलाई की तुलना प्रायश्चित से व रंगाई की तुलना साधना से कर सकते हैं। हमारे चित्त पर, अवचेतन पर, पूर्व जन्मों के किए गए कुकर्मों, कुसंस्कारों के मैल की परत चढ़ जाती है। इस मलिनता को दूर करने के लिए, प्रायश्चित विधान का स्वरुप हमारे शास्त्रों में निर्धारित किया गया है। पाप का प्रकटीकरण, पाप को हलका करता है और चित्त पर छाए हुए कलुष से मुक्ति भी दिलाता है। जिस प्रकार धुलाई का कार्य धोबी का है, उसी प्रकार इन पापों का प्रायश्चित, गुरु जैसी मार्गदर्शक सत्ता के सान्निध्य में करने की परंपरा है। प्रायश्चित साधना द्वारा इन कर्मो के बोझ से मुक्त होते ही-व्यक्तित्व पर साधना द्वारा दैवी रंग चढ़ा देने का प्रावधान है। इन दोनों प्रक्रियाओं के पूर्ण होते ही व्यक्तित्व प्रकाशित हो उठता है और अंतर्मन पर ईश्वरीय प्रकाश का रंग चढ़ जाता है।

गाय जगाए सोया भाग्य

माना जाता है कि जिस व्यक्ति के भाग्य की रेखा सोई हुई हो तो वो व्यक्ति अपनी हथेली में गुड़ को रखकर गौ माता को जीभ से चटाए गौ माता की जीभ हथेली पर रखे गुड़ को चाटने से व्यक्ति की सोई हुई भाग्य रेखा जागृत हो जाती है। गौ माता के चारों चरणों के बीच से निकलकर परिक्रमा करने से इंसान भयमुक्त हो जाता है।भूलकर भी गाय को ना मारे लात, इससे जीवन में अकाल मृत्यु की संभावना बढ़ जाती है।

जीवन देवता की साधना-आराधना

मनुष्य जीवन प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है, जिसमें व्यक्ति जो चाहे वह फल पा सकता है। परम पूज्य गुरुदेव के शब्दों में जीवन प्रत्यक्ष देवता है, जिसकी साधना व आराधना तुरन्त साधक को फल देती है। ईश्वर की आराधना का फल कब मिले, कुछ कह नहीं सकते, लेकिन आत्मदेवता तुरन्त फलित होते हैं। आवश्यकता इसके स्वरुप को समझने व इसमें समाहित संभावनाओं को साकार करने की है।

मानवीय जीवन असीम संभावनाओं से भरा हुआ है। शास्त्रों में ऋषियों ने बारंबार व स्पष्ट रुप से कहा है कि व्यक्ति में वे सारी संभावनाएं बीज रुप में विद्यमान है, जो स्वयं परमात्मा में हैं। ''ईश्वर अंश जीव अविनाशी'' के रुप में ईश्वर के राजकुमार के रुप में मनुष्य ईश्वर की सबसे अनुपम प्रतिकृति है। यदि वह चाहे तो ईश्वरप्रदत्त अंतर्निहित क्षमताओं को जाग्रत करते हुए इनको साकार कर सकता है और अद्भूत कार्य कर सकता है। इसी आधार पर मानव जीवन को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं। अपने तप एवं पुरुषार्थ के आधार पर स्वर्ग का राज्य भी उसके लिये जरा-सा भी दूर नहीं रह जाता।

इसके लिए ईश्वर ने मनुष्य को सकल संभावनाओं के साथ युक्त किया है। मनुष्य को शरीर, समय एवं मनोयोग के रुप में ऐसे प्राकृतिक उपकरण एवं साधन उपलब्ध हैं, जिनका सही नियोजन करते हुए वह मनचाही उपलब्धि को प्राप्त कर सकता है। इसके साथ कल्पना, इच्छा, विचार, भाव एवं अंतर्प्रज्ञा जैसी शक्तियां एवं विशेषताएं उसको विशिष्ट बनाती है, जिनका नियोजन करते हुए वह अपनी इच्छित सृष्टि का सृजन कर सकता है।

आवश्यकता मानव जीवन की गरिमा के बोध की है तथा तदनुरुप जीवन लक्ष्य के निर्धारण एवं इस ओर बढ़ने की है। प्रायः व्यक्ति ऐसी व्यवस्था न हो पाने के कारण पशुवत जीवन जीते देखा जाता है और यदि अपना स्वार्थ एवं अहं का दायरा और भी संकीर्ण एवं क्षुद्र हुआ तो उसे असुर और नर-पिशाच जैसा घृणित जीवन तक जीते देखा जाता है, जिसमें न तो व्यक्ति स्वयं चैन से रह पाता है और न ही दूसरों को चैन से जीने देता है। ऐसे में अज्ञान और तम की बेहोशी में इस बहुमूल्य जीवन को दो कौड़ी के भाव से यों ही बरबाद करते देखा जाता है।

इस त्रासदी से बाहर आने के लिए उस सूझ एवं साहस की आवश्यकता होती है, जो ढर्रे पर जीवन के बजाय मानवीय गरिमा के अनुरुप जीवन लक्ष्य को निश्चित करने की पहल कर सके। इसी आधार पर व्यक्ति अपनी क्षमताओं पर आधारित लक्ष्य को साधते हुए जीवन की सार्थक उंचाईयों तक पहुंच पाता है, जिस पर वह गर्व कर सके और दूसरों के लिए भी प्रेरक मिसाल बन सके।

लक्ष्य का सही निर्धारण हो इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि अपने व्यक्तित्व की सही समझ विकसित हो। इसके लिये रोज स्व-मूल्यांकन करना होता है। परम पूज्य गुरुदेव इसे आत्मबोध एवं तत्वबोध की साधना कहा करते थे जिसमें अपने वास्तविक स्वरुप के बोध से लेकर दैनिक कर्त्तव्य कर्मों को पूरा करते हुए अपनी समीक्षा के साथ संसार-समाज के सार-सबक को ग्रहण करते हुए मानवीय गरिमा के अनुरुप जीवन जिया जाता है और जीवन में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त होता है।

इसके साथ ही वह जीवन-दृष्टि विकसित होती है, जो एक स्वस्थ एवं प्रभावी जीवनशैली के रुप में मूर्त हो, जो व्यक्ति के आहार-विहार, व्यवहार एवं विचार के साथ मिलकर बनती है। दिन भर इनका लेखा-जोखा रखना होता है। इसके लिये 24 घंटों का हिसाब-किताब रखना पड़ता है कि कैसे इनका सही नियोजन किया गया। खान-पान से लेकर दिन भर का संग साथ और भाव चिंतन कैसा रहा, इस पर सजग दृष्टि रखनी पड़ती है, साथ ही दूसरों के साथ वाणी एवं व्यवहार की स्थिति कैसी रही, इसका भी आकलन हमेशा ही करते रहना पड़ता है।

इस तरह नित्य जीवन के हर आयाम का ध्यान रखते हुए शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक हर पक्ष को तराशना पड़ता है। जीवन की चुनौतियों का धैर्य एवं साहस के साथ सामना करते हुए उन्हें उत्कर्ष की सीढ़ी बनाया जाता है और व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सफलता की मंजिलों को भी तय किया जाता है, लेकिन इसके साथ ही यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि यह सब एक तरफा न हो तथा मात्र स्वार्थपूर्ति एवं अहंतुष्टि का साधन भर न हो।

जीवन को पूर्णता देने के लिए, इसके संतुलित विकास के लिए इसमें पारमार्थिक भाव का जुड़ना आवश्यक हो जाता

है जो आध्यात्मिक आयाम के साथ जुड़ने पर ही सरल-सहज एवं संभव होता है तभी जीवन की पूरी संभावनाएं साकार होने की दिशा में सार्थक कदम बढ़पाते हैं और जीवन में बाहरी उपलब्धियों के साथ आंतरिक शांति-संतोष का संगम हो पाता है।

इस तरह जीवन देवता एक तरह से कामधेनु, कल्पवृक्ष एवं पारस सरीखा सिद्ध होता है, जिसकी साधना एवं आराधना प्रत्यक्ष फल प्रदान करने वाली होती है, लेकिन इसका विधि-विधान ईश्वर को खुश करने के लिए अपनाए गए कोरे कर्मकांड से भिन्न होता है, जहां मात्र चिन्हपूजा के साथ भगवान को रिझाने के प्रयास चल रहे होते हैं और इनका प्रतिफल पूरी तरह से भगवान की कृपा पर निर्भर होता है, जबकि जीवन देवता के साथ सब कुछ प्रत्यक्ष होता है, लेकिन इसके लिये चौबीस घंटे, दिन के हर पल सजग-सचेष्टा रहकर जीवन-साधना में निमग्न रहना पड़ता है। इसमें किसी शॉर्टकट की गुंजाइश नहीं रहती। यहां जीवन-साधना के राजमार्ग पर व्यक्तित्व के हर पहलू को परिष्कृत करते हुए मंजिल की ओर बढ़ना होता है, जिसका हर पड़ाव लक्ष्य सिद्धि के आश्वासन के साथ साधक को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर रहा होता है।

चार पैसों का रहस्य

1- भोजन अर्थात् अपना तथा अपने परिवार पत्नी, बच्चों का भरण-पोषण करना, पेट भरने के लिए।

2- पिछला कर्जा उतारना- अपने माता-पिता की सेवा के लिए उनके द्वारा किये गये हमारे पालन-पोषण कर्ज उतारने के लिए।

3- आगे कर्ज देना- सन्तान को पढ़ा-लिखा कर काबिल बनाने के लिए ताकि आगे वृद्धावस्था में वे आपका ख्याल रख सकें।

4- कुएं में डालने के लिए- अर्थात शुभ कार्य करने के लिए दान, सन्त सेवा, असहायों की सहायता करने के लिए, यानि निष्काम सेवा करना, क्योंकि हमारे द्वारा किये गये इन्हीं शुभ कर्मो का फल हमें इस जीवन के बाद मिलने वाला है।

इन कार्यो के लिए हमें चार पैसों की जरुरत पड़ती है। यदि तीन पैसे रह गए तो कार्य पूरे नहीं होंगे और पांचवें पैसे की जरुरत ही नहीं है। यही है चार पैसों का गणित।

सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए व्यक्तियों के लिए बेहतरीन मैसेज

किसी भी सामाजिक संस्था के संदर्भ में कुछ खास बातें जो आपको बहुत काम आएंगीः-

1- आप कुछ नहीं करेंगे तो आपको कोई कुछ नहीं कहेगा।

2-आप अगर सक्रिय है तो, उंगलियां भी आप पर ही उठ सकती है।

3- अगर आप ये नहीं सोचेंगे कि श्रेय किसको मिलेगा तो आप बहुत कुछ कर सकते है।

4- आप जितना ज्यादा काम करेंगे उतना ज्यादा और काम करना पड़ेगा।

5- जिम्मेदारी उसी की तरफ खिंची आती है जो उन्हें उठाना चाहता है।

6- आप अपने मन से जो भी प्रोजेक्ट करेंगे उसकी सफलता का श्रेय संस्था को मिलेगा और असफलता की जवाबदेही आपकी ही होगी।

7- आपको प्रशंसा तब मिलेगी जब आप उसकी अपेक्षा करना बंद कर देंगे।

8- आप लोकप्रिय तब होंगे जब अपने साथियों के कार्य को सराहेंगे और उनका उत्साह बढ़ाएंगे।

9- आप कब सही थे कोई याद नहीं रखेगा, आप कब गलत थे कोई नहीं भूलेगा।

10-सबसे खास बात सामाजिक कार्यो का उद्देश्य मन की संतुष्टि होता है। इसके लिए बहुत कुछ सहन होता है।

11- कार्य करते हुए कभी-कभी कोई आपको जानबूझकर अपमानित भी कर सकता है तो आप कार्य पर ही ध्यान दें क्योंकि किसी को सम्मान देना या अपमान करना यह उसके स्वयं के विवेक और संस्कार का प्रश्न है....

सब कुछ बदलने में देर नहीं लगें....

-डॉ. सुभाष जैन

सृष्टि के सर्जन में दो तत्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, ये है- ज्ञान और कर्म। मानव का पादुर्भाव इस पुण्यधरा पर होते ही कर्म के बंध आरंभ हो जाते है। जन्म के साथ मिले पुण्य प्रभाव से व्यक्ति का जीवन निर्माण होता है। इसमें पूर्व कर्मो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है परन्तु यह बहुत ही विचारणीय है कि हमें मिले मानव भव में हम कौन से कर्म करेंगे कि यह मानव हमारे आनेवाले भव की भूमिका का आधार बन जाये? आने वाले भव की कौन चिंता करता है? किसने देखा आनेवाला भव अरे,हमें तो आज की चिंता है। अगर यह भव ही बिगड़ गया तो फिर जन्म लेने का फायदा ही क्या हुआ? शायद आम आदमी की यही सोच है और इसी सोच पर वह अपने जीवन के पल जी रहा है। उसके कर्मो से तो यही लगता है अगर कर्मों की क्रिया को आगे बढ़ाने के पूर्व वह तनिक भी अपने ज्ञान का उपयोग करता है अथवा किसी से ज्ञान प्राप्त कर लेता तो शायद दुनिया में होने वाले अनेक अनैतिक हिंसक अत्याचार से यह धरा बच जाती।

वर्तमान में मनुष्य के चरित्र में जो बदलाव आये है वे मानव के लिये ही आश्चर्य का कारण बन गये है। हमारे चारों ओर जो कुछ हो रहा है उसको देख-सुन और जानकर लगता है कि अब मनुष्य की नई परिभाषा लिखनी होगी। स्वार्थ, मतलबपरस्ता, लोभ, लालच और पैसे के लिये सब कुछ बेचने को तत्पर बना मानव इस दुनिया में सब कुछ पाने के चक्कर में सब कुछ करने को भी तैयार है। पद लोलुप्ता और यश लोलुपता के साथ अर्थ (धन) को प्रथम स्थान पर रखते हुए मनुष्य ने वर्तमान समय में जो दुष्कृत किये है वे हमारे लिये राष्ट्रीय शर्म और दुर्भाग्य का विषय बन गये है, भ्रष्टाचार की विकृति ने लोगों के जीवन को बिगाड़कर रख दिया है। उदारवादी और पूंजीवाद ने उपभोग की नई परिभाषा से हमारे सामने जो प्रस्तुतियां दी है यह मानव के बदलते चरित्र को उजागर करती है, यही नहीं टीवी और फिल्मों के साथ आधुनिक तकनीकी साधनों और दूरसंचार के माध्यमों ने अश्लील कुत्सित एवं भौड़े नग्न नाच प्रदर्शनों के व्यापक विस्तार के साथ संस्कारों से सरोकार नहीं रखनेवाले मानव ने समाज में अपराध, हिंसा और बलात्कार की श्रृंखला ऐसे खड़ी कर दी है जैसे वे सुकृत है।

काम से अधिक दाम की विकृत सोच ने सरकारी तथा गैर सरकारी विभागों में प्राप्त होने वाले आवंटन को अपनी निजी मिल्कीयत समझकर उसका अपने निजहित स्वार्थ में किया गया दुर्पयोग भ्रष्टाचार का नासुर बन गया है। समाज हित में लगने वाले सरकारी तथा गैर सरकारी धन को अफसरों और नेताओं ने अपने घर में भरकर देश को खोखला कर दिया है। यही नहीं ऐसे भी पढ़े लिखे लोग है जिन्होंने भोगवाद और स्वार्थ की लालसा में विदेशी शक्तियों के हाथों की कटपुतली बन, लोभ लालच में राष्ट्र और अपने धर्म को ताक में रख दिया है। मानव को क्या हो गया है? धन की उपयोगिता सद्व्यय में है न कि उसके अपव्यय या संग्रह में है, इस छोटी सी बात को समझने वाले मानव की बुद्धि लगता है,भ्रष्ट हो गई है, क्योंकि संग्रह के जो आंकड़े हमारे सामने आये है वे चौंकानेवाले है। क्या हम **'विनाश काले विपरित बुद्धि'** की उक्ति को सर्वमान्यता प्रदान कर अपने लिये ही बर्बादी का गड्डा नहीं खोद रहे है? क्या ऐसा नहीं लगता है कि अपने जीवन की सांसों को सिर्फ उपभोग की वस्तु मानकर उपयोग में ले रहे हैं परन्तु जब यह उपभोग की वस्तु (सांस) समाप्त हो जायेगी तथा क्या होगा? शायद आज का मानव बस यही नहीं सोचना चाहता है।

क्या इन सब दुष्कर्मों से मानव को बदलने के लिये रास्ता नहीं है? कौन कहता नहीं है? बचने के बारे में तो मानव को स्वयं को विचार करना होगा। मैं समझता हूं चाहे कम बुद्धि के साथ ही परन्तु सभी को जीवन के साथ कर्मों के प्रतिफल के बारे में ज्ञान की भेंट तो मिली ही है। फिर भी मानव यही सब कुछ क्यों करता चला जा रहा है, यह अहम सवाल है।

मनुष्य को जीवन के वे तमाम दुष्कर्म या शुभकार्य से प्राप्त यश, दौलत, सम्मान, प्रतिष्ठा अथवा कुछ हो जाने पर या कुछ बन जाने के बाद यह बातें एक समय बाद तृष्णा और तिरस्कार का कारण बन जाती है और जब ऐसा कुछ जीवन में हो जाये तो मनुष्य को सेवा, विनम्रता और सहजता की पुण्य परम्परा को नहीं भूलना चाहिये। एक बार बस एक बार तो लौटकर मनुष्य देखें, उसे तुरन्त ही समझ में आ जायेगा कि बिती बिसार दे आगे की सुद लें। अगर हम सब उपरोक्त शब्दों को संकेतवादक के रूप में न लेकर प्रेरणादायक जीवन निर्माता के रूप में देखेंगे तो सब कुछ बदलते देर नहीं लगेगी, शायद हर कोई एक समय बाद यही चाहेगा कि सब कुछ बदलने में देर नहीं लगें। इसी शुभ भाव से।

सकारात्मक रखें दृष्टिकोण

हमारा दृष्टिकोण ही हमारे जीवन की दिशाधारा तय करता है। छोटी-छोटी घटनाओं में दृष्टिभेद से ही हमारे देखने के नजरिए में बहुत अंतर हो जाता है। जैसे-जैसे-यदि शरबत से भरा हुआ आधा गिलास है, तो वह किसी के लिए आधा खाली है जबकि किसी और के लिए वह आधा गिलास भरा हुआ है। जिसे वह शरबत नहीं चाहिए, उसके लिए वह आधा भरा हुआ है और जिसे उस शरबत की प्यास है, उसके लिए वह गिलास आधा खाली है, पूरा भरा हुआ नहीं है। गिलास को आधा भरा हुआ कहो या आधा खाली, दोनों का मतलब एक ही है, लेकिन इसमें दृष्टिकोण का फरक है और हमारी इच्छाओं का भी।

जिस व्यक्ति ने गिलास को शरबत से आधा भरा हुआ समझा, उसका दृष्टिकोण सकरात्मक था और जिस व्यक्ति ने उस शरबत के गिलास को आधा खाली समझा, उसका दृष्टिकोण निषेधात्मक था, यानी निषेधात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति का ध्यान अभाव की ओर रहता है जबकि सकरात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति का ध्यान भाव की ओर रहता है।

हर व्यक्ति में गुण और अवगुण, दोनों होते हैं, लेकिन यदि हमारा चिंतन गुणों की ओर केंद्रित रहे, तो उसके फायदे के रुप में हमें शांति व प्रसन्नता का अनुभव होता है। इसके विपरीत निराशावादी और अवगुणवादी मनुष्य अपने चारों ओर अभावों और दोषों के दर्शन करते रहते हैं, जिसके कारण वे अपने जीवन में शांति और प्रसन्नता का अनुभव कर ही नहीं पाते। जो व्यक्ति अभाव को भाव, विषाद को हर्ष तथा दुःख को सुख में बदलने की कला जानता है- उसी व्यक्ति का जीवन सार्थक एवं सफल है।

दुःखी मनुष्य अपनी कल्पनाओं के सहारे छोटे से दुःख को भी बहुत बड़ा रुप दे देता है। वह स्वयं को संसार का सबसे दुःखी और अभागा व्यक्ति समझने लगता है पर, यह सब मात्र भ्रम होता है। सच्चाई यह है कि उससे भी अधिक दुःखी और समस्याग्रस्त लोगों से यह संसार भरा हुआ है।

सुखी और दुःखी, दोनों तरह के मनुष्यों के लिए अपनी दृष्टि को व्यापक बनाना जरुरी है। इससे जहां सुख का अभिमान मिट जाता है, तो वहीं दुःख का भाव और तनाव भी खतम हो जाता है। अपनी वास्तविक स्थिति को भूलकर हम जब भी औरों से अपनी तुलना करने का प्रयत्न करेंगे, हम अपने कर्त्तव्यों से व भली प्रकार अपने कर्म करने से विमुख होंगे। ऐसा करने पर हम मात्र औरों के हाथों का खिलौना बनकर रह जाएँगे। वास्तव में सुख और दुःख, दोनों ही सीमाहीन हैं यानी इनकी कोई सीमा नहीं है। ऐसी स्थिति में यदि हम स्वयं को घोर दुःखी और अभागा समझने लगे, तो हमें इसके लिए नए-नए कारण मिलते ही चले जाते हैं। जैसे- रोगी मनुष्य रोग से भी अधिक उसकी कल्पना व चिंता के भार से रोगी होता है, उसी प्रकार दुःखी व्यक्ति उलझनों और समस्याओं की पुनः-पुनः स्मृति से और अधिक दुःखी होता है।

एक सामान्य प्रवृत्ति यह है कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं को अधिक दुःखी समझता है। इस मनोवृत्ति में सुधार और परिष्कार करना चाहिए। दूर से पर्वत मनोरम प्रतीत होते हैं, लेकिन उनके निकट जाने पर उनका आकर्षण खतम हो जाता है। इसी तरह दूर से ढोल बजने की आवाज आने पर बहुत अच्छा लगता है, लेकिन इनके पास जाने पर ढोल के तेज स्वर के कारण मन बेचैन होने लगता है।

कुछ लोग अपने परिवार के वातावरण, व्यवसाय व नौकरी से व्यर्थ ही असंतुष्ट और दुःखी प्रतीत होते हैं। प्रायः उन्हें दूसरे परिवारों में, व्यवसाय में, नौकरी में अधिक सुख-शांति, वैभव, उन्नति के दर्शन होते हैं, पर जब वे उनकी अंतरंग स्थिति से परिचित होते हैं, तो स्वयं के अज्ञान पर ही हंसने लगते हैं।

दूसरों को देखकर उनके जैसा बनने, उनके जैसा पाने यानी देखा-देखी करने की यह मनोवृत्ति व्यक्ति को सिर्फ भीड़ का एक हिस्सा बनाकर छोड़ देती है, जो न सही सोच सकता है और न ही सही निर्णय ले सकता है और न ही सही समय पर प्रतिकूल हवाओं से स्वयं को बचा जा सकता है। यह देखादेखी की मानसिकता उसे न प्रेरक संदेश दे पाती है और उचित निर्णय और ऊंचा आदर्श बनाने देती है। इन जटिल और विषम स्थितियों में हमारी आध्यात्मिक साधना और उपासना ही हमारे सोये हुए मनोबल और आत्मबल को जगा सकती है और उसी से दुःख और भय की ग्रंथियां नष्ट हो सकती है। ऐसा होने पर ही हम स्वयं को सुखी व सौभाग्यशाली महसूस कर सकते हैं और फिर वैसे में स्वयं ही नए-नए अवसर मिलते चले जाते हैं।

आत्मदृष्टि से जीवन बनता है उत्सव

एक बार एक शिष्य ने अपने गुरु से बड़ी विनम्रतापूर्वक पूछा- ''गुरुजी ! कुछ लोग कहते हैं कि जीवन एक संघर्ष है, कुछ अन्य कहते हैं कि जीवन एक खेल है और कुछ कहते हैं कि जीवन एक उत्सव है। इन तीनों में सही कौन है गुरुदेव ?'' गुरु ने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक कहा- ''वत्स ! जीवन एक संघर्ष भी है, जीवन एक खेल भी है और जीवन एक उत्सव भी है- ये तीनों ही बातें सही है।'' शिष्य ने फिर से पूछा- ''गुरुदेव ! ये तीनों ही बातें कैसे सत्य हो सकती है ? यदि जीवन एक संघर्ष है तो खेल कैसे हो सकता है ? यदि जीवन एक संघर्ष है तो जीवन उत्सव कैसे हो सकता है ? मुझे लगता है कि जीवन या तो संघर्ष हो सकता है या खेल या फिर उत्सव, पर जीवन एक साथ संघर्ष, खेल और उत्सव कैसे हो सकता है ? कृपया इसे स्पष्ट करने की कृपा करें गुरुदेव।''

गुरु बोले- ''वत्स ! जिन्हें जीवन में गुरु नहीं मिला, उनके लिये जीवन एक संघर्ष है। जिन्हें गुरु मिल गया, उनके लिये जीवन एक खेल है और जो लोग गुरु के द्वारा बताये गये मार्ग पर चल पड़े, उनके लिये जीवन एक उत्सव है। जीवन में संघर्ष भरा हुआ है। व्यक्ति को जीवन में पग-पग पर संघर्ष का सामना करना पड़ता है। वह संघर्ष कभी बाह्य कारणों से, ब्राह्य परिस्थितियों से उत्पन्न होता है तो कभी मनुष्य की अपनी ही मनः स्थिति के कारण मनुष्य को जीवन में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

गुरु ने आगे कहा- ''संघर्ष माने वह चारों ओर से स्वयं को समस्याओं से घिरा हुआ पाता है। वह उन समस्याओं से बाहर निकल आने को संघर्ष करता हुआ दिखाई पड़ता है। उसे जीवन में कई बार हार का सामना करना पड़ता है। उसे असफलता का सामना करना पड़ता है। सामान्य व्यक्ति हार का सामना करते-करते, असफलता का सामना करते-करते अंदर से टूटने लगता है, बिखारने लगता है। वह हार और असफलता को ही अपनी नियति मानने लगता है।''

गुरु ने समझाया- ''वह स्वयं को चारों ओर से हताशा और निराशा के चक्रव्यूह में फंसा हुआ देखकर जीवन की चुनौतियों और संघर्षो के सामने अंततः घुटने टेक देता है और आत्महत्या जैसे कदम भी उठाने की सोचने लगता है। ऐसा इसलिये हो पाता है क्योंकि व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों और संघर्षो का सामना करना नहीं आता। उसे किसी ऐसे गुरु का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हो पाता, जो उसे जीवन की चुनौतियों एवं संघर्षो का सामना करना सिखा सके। अतः जिसे जीवन में गुरु नहीं मिला, गुरु का संरक्षण-मार्गदर्शन नहीं मिला,उसके लिए तो जीवन संघर्ष ही है, जिससे वह बाहर निकल पाने में स्वयं को असक्षम और असमर्थ पाता है, पर जब व्यक्ति को किसी गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है, तब उसके लिए जीवन एक खेल की तरह होता है।''

अपनी बात आगे बढ़ाते गुरु ने कहा- ''वह जीवन में आई कठिन से कठिन चुनौतियों को खेल समझता है। कठिन चुनौतियों और संघर्षो के समक्ष घुटने टेकने के बजाय वह एक योद्धा, खिलाड़ी की तरह उनका बहादुरी और कुशलता पूर्वक सामना करता है। जैसे खेल के मैदान में दौड़ता हुआ, खेलता हुआ खिलाड़ी अपने कोच, प्रशिक्षक, गुरु से सीखे गए खेल की बारीकियों को ध्यान में रखकर खेल खेलता जाता है और खेल के परिणाम को अपने पक्ष में करता जाता है, पर जिन्हें जीवन में कुशल प्रशिक्षण, गुरु नहीं मिल पाए उनके लिये खेल की बारीकियों को समझना और तदनुरुप खेलकर जीत हासिल करना संभव नहीं हो पाता है।

''जैसे समुद्र में आए भीषण तूफान के सामने अकुशल और प्रशिक्षित नाविक हार मान लेते है और अपनी नाव को तूफानों से निकालकर समुद्र में उठती तेज लहरों से निकालकर उसे किनारे लगाने में सफल नहीं हो पाते, पर जो इस विद्या में कुशल हैं, पूर्ण प्रशिक्षित हैं, वे उन तूफानों के बीच भी अपनी नाव को तूफानों के पार सकुशल सुरक्षित पहुंच पाने में सफल होते हैं।

गुरु ने आगे कहा- ''जीवन के संघर्ष भी समुद्र में उठने वाली लहरों की तरह, तूफानों की तरह हैं। जो व्यक्ति अपने गुरु के प्रशिक्षण से पूर्ण प्रशिक्षित है, वह स्वयं को इन तूफानों से पार पाने में सफल होता है, पर हां, यहां यह समझना भी आवश्यक है कि यदि शिष्य गुरु से मात्र भौतिक सुख, भौतिक उपलब्धि के लिए ही जुड़ा है तो उसे जीवन रुपी खेल में कभी हार का तो कभी जीत का सामना करते रहना होगा। उसे

हार-जीत, हर्ष-विषाद, मान-अपमान, आशा-निराशा, हानि-लाभ के द्वंद्वों में रहना ही होगा। उसे उन द्वंद्वों के झूले में झुलते रहना होगा और जब तक वह द्वंद्वों में है, तब तक वह पूर्णतः सुखी नहीं हो सकता। उसे खेल में नहीं जीत पाने की आशंका दुःखी करती ही रहेगी।''

उन्होंने समझाया- ''वह जीत में हर्षित होगा तो हार में अति दुःखी। वह जीवनरुपी खेल में सफलता और सम्मान पाकर मदमस्त मतवाले हाथी की तरह स्वयं के साथ-साथ दूसरों को हानि भी पहुंचा सकता है। यह जीवन में जीत-ही-जीत की आशा करेगा, आकांक्षा करेगा, पर हमेशा यह कहां संभव है क्योंकि खेल में हार-जीत लगे ही रहते हैं। जीवन में सुख-दुःख तो आते ही हैं। जीवन में हानि-लाभ तो रहते ही हैं। ऐसी स्थिति में कभी खेल में,संघर्ष में जीतकर भी आगे कहीं हार न जाए इस आशंका से जीत पाकर भी मन दुःखी रहता है।''

गुरु ने अपनी बात आगे बढ़ाई- ''भविष्य में हारने या असफलता पाने की आशंका में मन दुःखी रहता है, फिर हार या असफलता में तो मन दुःखी होगा ही। अस्तु जब तक हार-जीत, हानि-लाभ की आशंका से मन दुःखी रहता है तब तक व्यक्ति, खिलाड़ी की तरह खेल का आनंद नहीं उठा पाता, बल्कि वह तो मात्र खेल के परिणाम को लेकर ही चिंतित रहता है।''

वे बोले- ''जीवन रुपी संघर्ष और खेल में सफल होने के लिये और जीवन को उत्सव बनाने के लिए जीवन के हर पल को उत्सव बनाने के लिए व्यक्ति के पास प्रचंड पुरुषार्थ, प्रचंड मनोबल के साथ-साथ जीवन-दृष्टि, आत्म दृष्टि, आत्मबल का होना भी बहुत जरुरी है, तभी जीवन उत्सव बन पाता है। अतः जो गुरु से आत्म दृष्टि, आत्मज्ञान पाने के लिए जुड़ा है, जो गुरु के उपदेश को अपने जीवन में अपनाने के लिए जुड़ा है- तब वह गुरु से मात्र मिलने के लिए नहीं जुड़ा है, तब वह गुरु से भस्म, भभूति, ताबीज पाकर सब कुछ पाने की आशा से नहीं जुड़ा है, बल्कि वह गुरु से ज्ञान पाकर ज्ञान में ही जीने के लिए जुड़ा है। उसके लिए तो उसका जीवन ही उत्सव बन जाता है।

भगवान

नमुत्थुणं सूत्र में गणधरों के निकट के अनुभव से बताया है कि भगवान उन्हें कैसे लगे ? स्वरुप-सम्पदा, उपयोग-सम्पदा आदि पढ़ने से भगवान की महिमा के संबंध में अधिक जानकार बन कर हम उनके प्रति अधिक भक्ति वाले बन सकते है।

प्रभु के प्रति ज्यों-ज्यों प्रीति में उल्लास बढ़ता है, त्यों त्यों भक्ति बढ़ती है। प्रीति और भक्ति बढ़ने पर उनकी आज्ञा पालन करने का उल्लास बढ़ता है।

साक्षात् परमात्मा मिल जाये तो भी उनके पास समवसरण की देशना के अतिरिक्त अधिक समय तक बैठने को नहीं मिलता। शेष समय में प्रभु के नाम, मूर्ति आदि ही आधार रुप है। प्रभु के प्रति प्रेम हो तो प्रभु के नाम, मूर्ति आदि के प्रति प्रेम होगा ही। प्रभु के नाम, गुण, मूर्ति आदि के द्वारा भक्त निरन्तर सम्पर्क में रहता है।

जिन भगवान के प्रति अपार प्रेम उमड़ता है वे भगवान कैसे होंगे ? यह जानने के लिये मन लालायित बनता ही है। यह भी जिन्होंने साक्षात् भगवान देखे हों उनके मुंह से भगवान का वर्णन सुनेगा कितना प्रिय लगता है ? गणधरों ने भगवान को साक्षात् देखे हैं। उन देखे हुए भगवान का ''नमुत्थुणं'' में वैसा ही वर्णन है।

✼ मुनिचन्द्रसूरीजी ने पंजिका में लिखा है कि तीर्थ रहे तब तक भगवान का उपकार चालू ही रहता है, इस समय भी चालू है और अभी साढ़े अठारह हजार वर्षो तक उपकार चालू ही रहेगा। भोजनशाला चलती हो तो अन्न-दान का उपकार होता रहता है, उस प्रकार यहां धर्म-दान का उपकार होता रहता है।

तीर्थ का एक ही कार्य है– जीवों को संसार से पार उतारना। यह कार्य पांचवें आरे के अन्त तक चलता ही रहेगा, तब तक भगवान की शक्ति सक्रिय रहेगी। जो कोई उस शक्ति का स्पर्श करेगा,उसका कल्याण होगा ही। भगवान मार्गदर्शक है और स्वयं मार्ग भी है।

नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः।

– भक्तामर

भगवान को छोड़ कर दूसरा कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है।

✼ माता-पिता की सम्पत्ति पुत्र की है, उस प्रकार भगवान की सम्पत्ति भक्त की है। भक्त ही भगवान का सच्चा उत्तराधिकारी है।

जीवदया फण्ड

।। श्री परमात्मने नमः।।

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी
सुभाष चौक, गोपीपुरा, सूरत-1
मोबाईल : 09825414470 /
9820078772
स्थापना वि.सं. 1962 ई.सं. 1906
रजि. नं. 1744
PAN - AAATS8024L

सेठ श्री नगीनदास कपूरचंद जवेरी
के सद्प्रयास से।

सेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी
पैसे भेजने का पता
प्रफुल अमीरचंद झवेरी
26, खटाऊवाड़ी, गोरेगांवकर लेन
सेन्ट्रल सिनेमानी पीछे, मुंबई-400 004
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद् गृहस्थश्री, सादर प्रणाम!

जीवदया फण्ड संस्था सूरत के दानवीर सेठ श्री नगीनचंद कपूरचंद झवेरी के प्रयास के द्वारा स्थापित एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फण्ड संस्था के द्वारा कत्ल के लिये जानेवाले और जिन उपयोगी जीवों को छुड़वाकर के सूरत की पिंजरापोल में भेजा जाता हैं। यह कार्य पिछले 114 सालों से यह संस्था कर रही हैं और सेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से इस कार्य में लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे कि पिछले पांच सालों के दौरान (अप्रेल 2014 से मार्च 2019) 10798 जीवों को छुड़ाया/बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बुजुबान जीवों को पिंजरापोल में ट्रस्टियों के द्वारा निगरानी करके सौंपा जाता है और पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा और जीव के प्रति मैत्री। सर्वज्ञश्री के इस संदेश को सार्थक करने के लिये दिनों का भी बहुत बड़ा महत्व है। जैसे कि-

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।
आपके परिवार में हुए शुभ लग्नोत्सव के दिन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।
कर्मसंयोग के कारण आई हुई बीमारी का दुःख और अशाता को टालने के लिये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करें।
अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुख में से छुड़वाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है और
आपके स्वजन की सद्गति प्राप्ति की प्रार्थना भी कर सकते है।
पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीव को
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया और करुणामय बनायें।

आपश्री हमेशा के नीचे तिथि का भी चयन कर सकते हैं। इस तिथि के दिन दान में दी गई रकम का जो ब्याज भी मिलता है उसमें से जीव को छुड़वाया जायेगा।

इस संस्था के द्वारा अप्रेल 2020 से मार्च 2021 के एक वर्ष के समय जो भी लॉकडाउन था उस समय में करीब 2593 जीवों को छुड़वाया गया है

आपश्री चैक या ड्राफ्ट जीवदया फण्ड के नाम का बनाए। रोकड़ रकम में भी आप योगदान दे सकते है। आपश्री का अनमोल योगदान सूरत और मुंबई में ऊपर दिये गये पते पर भी जमा कर सकते हैं।

आपश्री आपका योगदान हमारे बैंक खाते के अंदर भी जमा करवा सकते हैं। जिनकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80 G नंबर AAATS80LF20210 है।

Bank Name - AXIS BANK LTD.	Bank Name - BANK OF INDIA
A/c Name - JIVDAYA FUND	A/c Name - JIVDAYA FUND
IFSC -UTIB0002274	IFSC -BKID000001
A/c No.- 921010033621820	A/c No.- 001201000001219
Branch -Charni Rd, Mumdai	Branch -Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से लिये हुए कार्य से अक्षय सुख और मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है। और नरकगति के कर्म का और अनेक भवों के पापों का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनों लोक में श्रेष्ठ और सर्वोत्तम कार्य है।

दान
एक सफल जीवन

ट्रस्टी गण-
प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई, पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी
नतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई, गुलाबचंद काटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वर्ग पहेली क्रमांक-354

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	■	3	4			5
	■	6				■	■	
	■		■		■	7	8	
9	10	■	11		12	■	13	
■	14			■	15			■
16		■	17	18		■	19	20
21			■		■	22		
	■	■	23				■	
24				■	■	25		

बाएं से दाएं:-

1- जो पूरे नहीं होते वो होते है--- (3)
3- आन्ध के गुन्टूर जिले में कृष्णा नदी किनारे चिन्तामणि पार्श्व प्रभु का तीर्थ (5)
6- कर्नाटक के उडिपी जिले में स्थित नेमि प्रभु का जैन तीर्थ जहां 59 फीट का मान स्तम्भ भी है(4)
7- बीकानेर से प्रकाशित एक जैन पाक्षिक पत्रिका श्रमणो--- (3)
9- तमिलनाडु के उत्तर आरकाट जिले में स्थित भ. कुंथुनाथ का जैन तीर्थ---गिरी (2)
11- वीर प्रभु के दस प्रमुख श्रावकों में से एक चुल्ल---(3)
13-परजीवी बेल के रुप में पेड़पोधों पर फलती फूलती है यह अ--- बेल (2)
14-पंद्रहवें तीर्थकर की माता का नाम (3)
15-बारह चक्रवर्ती में से एक (3)
16- भावी चोवीसी के ग्यारहवें तीर्थकर होंगे श्री--त स्वामी(2)
17-सुलसा का जीव भावी चोवीसी में पंद्रहवें तीर्थकर होकर नाम होगा श्री---स्वामी (3)
19-माता सरस्वती के हाथों में होती है--- (2)
21-धरती, सतह का पर्याय ध--- (3)
22-बामनवाड़ तीर्थ के निकट, प्राचीनकाल का वीरपल्ली का वर्तमान नाम--- ड़ा (3)
23- मुझे तोड़लेना वनमाली, उस---देना तुम फेंक, मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावे वीर अनेक (2,2)
24-रानी धारिणी की पुत्री, चंदना का नाम (4)
25- चंबल की एक सहायक नदी जो रतलाम जिले में बहती है---(3)

वर्ग पहेली क्रमांक-353 का परिणाम

उ	द	य	■	सा	■	क	■	ज
मा	स	■	स	मु	द्र	वि	ज	य
स्वा	■	सु	■	■	बा	व	■	से
मी	झा	रा	पा	र्श्व	■	र	त	न
■	ट	■	प	ना	मा	■	ला	■
सु	■	प्र	■	■	ल्या	ण	म	न्दि
र	■	भा	र	■	र्प	ण	■	षे
प्र	भा	ष	पा	ट	ण	■	क	ण
भ	■	गि	■	का	■	फ	ल	■

ऊपर से नीचे:-

1- किसने कहा था- दीक्षा अंगीकार करके निकले हुए मुझ जैसे अनाथ को भगवान महावीर जैसे सच्चे नाथ मिल गये---नि (3,1)
2- मन तड़पत हरि दरशन को आज, मोरे तुम बिन बिगरे सग--- (1,2)
3- भ.महावीर के ग्यारह गणधर में से एक (4)
4- राजा कृत वर्मा और रानी श्यामा के तीर्थंकर पुत्र का नाम श्री वि---नाथ जी (2)
5- अयोध्या की पावन धरा पर जन्मे है जैनधर्म के चार---- (4)
8- भ.महावीर के ससुर का नाम (5)
10-कछुआ लांछन वाले तीर्थंकर प्रभु का नाम मु--- स्वामी (4)
11-कौशम्बी के राजा, जिनकी रानी मृगावती थी--- क (3)
12-सौगन्ध का पर्याय--- (3)
16-भगवान महावीर के एक मुख्य श्रावक का नाम (4)
18-पन्द्रहवें तीर्थंकर का नाम भगवान ध---स्वामी (3)
20- वर दे, वी---वर दे, प्रिय स्वतंत्र स्व अमृत मंत्र नव भारत में भर दे (4) (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता से)
22- भ.महावीर के जुलूस में ललगाया जानेवाला नारा वंदे--- (3)
23- मेरु शिखर न्हवरावे ओ सुर--- (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-354

✲ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न- पर्व तिथि बताईये ?

1- शासन स्थापना दिन? 2- नमि निर्वाण का मोक्ष दिन ? 3- पुंडरिक स्वामी ने शत्रुंजय पर कौन से दिन अनशन किया ? 4- साधु-साध्वी का विहार प्रारंभ दिन ? 5- सबसे बड़ा प्रतिक्रमण दिन ? 6-ऋषभदेव प्रभु ने कौन से दिन शत्रुंजय यात्रा की थी ? 7- मौन आरम्भ ? 8-ज्ञान पंचमी ? 9-मेरु नरेश ? 10-शंखेश्वर ध्वजारोहण दिन ?11-6 कोषी यात्रा दिन ? 12- पू.सागरजी म.सा. का जन्म दिन ?

एक आध्यात्मिक पथिक

*जिसने ब्रह्मत्व की साधना के लिये राग द्वेष आदि अंतरंग तथा ब्राह्य सांसारिक परिग्रह का परित्याग कर श्री वीरप्रभु के श्रमणत्व को स्वीकार किया जिनका यश आज सूर्य की किरणों की भांति सारे जैन जगत के आभा प्रदान कर रहा है जो जैन अतीत के आध्यात्म की महान आत्माओं के पद चिन्हों का अनुगमन करते हुए साधनारत हैं। हाँ ! **मैं आज आप से पूज्यपाद नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महरराजा की ही बात कर रहा हूं।** पूज्यश्री के बारे में लिखना मुझे आत्म साक्षात्कार का अनुभव जैसा लगता है।*

*उदार, महान, धर्मकर्म योगी अपनी साधना से शोक सन्तप्त मानवता के कष्ट निवारण करने के लिये प्रयत्नशील पूज्य गुरुदेव **श्री अपने विशाल हृदय में वात्सल्य और करुणा का सागर लिये अत्यन्त सहज भाव से लोगों को प्रेम बांट रहे है।** जैन संस्कृति के उत्थान के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण करने वाले आचार्यश्री मानवीय चेतना के जागरण के द्वारा मानव को सद्पथ पर आगे बढ़ाने के लिये कार्य कर रहे है। अपनी पदचाप के द्वारा आपने पूरे भरत खंड को गुंजायमान कर मानव को धर्म संदेश सुनाया है।*

*जीवन के अर्द्धशतक से भी अधिक बसंत देख पूज्यश्री तप साधना की कठोरता के साथ वात्सल्य और करुणा की प्रभावना करने वाले अंतरयात्रा करते हुए आत्मकल्याण के पाथिक है **उनके अधरों पर खिली मुस्कान के साथ मुख से झांकती दंतावली हमें यह दर्शन कराती थी कि वे जैसे बाहर से है वैसे ही अंदर से हैं।** पंच महाव्रतों से शुद्ध ज्ञानमय साधुत्व का पालन करते हुए वे आत्म साधक होने के साथ अन्य भव्य आत्माओं को बोध प्रदान कर रहे हैं।*

वर्ग पहेली क्रमांक-353 के परिणाम

विजेताः-

1- प्रीती हिंगड़, नरवर (म.प्र.) - प्रथम
2- चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय
3- कुसुम गौतम जैन, आगर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, प्रभा जैन, देवास, भारती जैन, देवास।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-353 के परिणाम

सही उत्तर-

1-भारण्ड पक्षी, 2- श्वेत हंस, 3- वृषभ, 4- खच्चर, 5- खरगोश, 6- बंदर, 7- कुतिया, 8- कूकड़ा (मुर्गा), 9- सिंह, 10- घोड़ा।

विजेताः-

1- कुसुम गौतम जैन, आगर (म.प्र.) - प्रथम
2- भारती जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय
3- चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

प्रियांशी जैन, नरवर, प्रभा जैन, देवास।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर, मोबाईल नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-11-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना– अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धान्यवाद।

वेसू सूरत में सर्वविरती की ओर मंगल प्रयाण की तपाराधना उपधान बंधु बेलड़ी की निश्रा में

वेसू- सूरत के उपनगर वेसू के ॐकारसूरी आराधना भवन में देशविरती से सर्वविरती की ओर ले जाने वाली मंगल आराधना उपधान का आयोजन बंधुबेलड़ी आचार्य देव श्री जिन हेमचंदसागर सूरीश्वरजी महाराज आचार्य श्री विरागचंदसागर सूरीजी महाराज, गणिवर्य श्री आनंदचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ साध्वी श्री संयमिताश्रीजी म.सा., संवेगरत्नाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में आरंभ हुआ है। उपधान तपाराधना में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 14 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत 16 अक्टूबर को हुआ। मोक्ष मालारोपण का विधान 2 दिसंबर को होगा।

छःरिपालक संघ की जय बुलाई

सूरत- श्री वासुपूज्य जैन श्वे. मू. संघ में पू. 451 दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के शिष्य पू. सूरि मंत्र आराधक आचार्य देवश्री रवि रत्नसूरीजी म.सा., पू.आ.श्री जयेश रत्नसूरीजी म.सा. एवं पं.श्री वैराग्यरत्न वि.म.सा.आदि 7 ठाणा एवं साध्वीश्री-5 ठाणा की निश्रामें शिवगंज (राज.) से पधारे मानुभावों द्वारा सोनगढ़ से शत्रुंजय तीर्थ का छःरि पालक संघ की जय बुलाई गई। श्री अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय महातीर्थ छःरिपालक संघ दिनांक 19-1-2025 से 24-1-2025 तक की जय बुलाई गई।

श्री नाकोड़ा में उपधान तप

नाकोड़ा- जिनशासन के विश्व विख्यात तीर्थ श्री नाकोड़ा में आचार्य देवश्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री सुमतिचंदसागरजी एवं मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा-2 की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की क्रिया उपधान तप का आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 15 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 17 दिसंबर से आरंभ हो रहा है। उपधान तप की माल तथा रथयात्रा का आयोजन 2 फरवरी 2025 को होगा। आयोजक श्री उवसग्गंहरम आराधक परिवार है।

महाविदेह धाम में उपधान तप

सूरत-महाविदेहधाम वरिष्ठ मार्ग दर्शक आ.श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि-51 गुरु भगवंतों की निश्रा में 12 अक्टू. से गुरु भक्त परिवार द्वारा उपधान का प्रारंभ हुआ। पालीताना व गिरनार का संघ निकलेगा।

छःरिपालित संघ और प्रतिष्ठा होगी

आहोर- श्री विमलनाथ जैन पेढ़ी के तत्वावधान में वेदमुथा परिवार द्वारा आयोजित चार्तुमास में मेवाड़ केसरी, नाकोड़ा तीर्थोद्धारक पू.आ.भ.श्रीमद् विजय हिमाचलसूरीजी म.सा. समुदाय के गच्छाधिपति पू.आ.भ.श्रीमद् विजय रविशेखारसूरीजी म.सा., पू.आ.भ. श्रीमद् विजयललितशेखार सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सिद्धितप, विमलनाथ तप,क्षीरसमुद्र,21 ,14 ,11अट्ठाई आदि तपस्या सानंद सम्पन्न हुई। पूज्यश्री की निश्रा में 5 दिसंबर से 23 दिसंबर को शंखेश्वर से पालीताना एवं 28 दिसंबर से 10 जनवरी 2025 गिरनार से पालीताना छःरि पालक संघ है। जसोल, घाणेराव, कीर्तिस्तंभ,फतेपुर, गांवगुड़ा, कणुजा, केसरनगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा है

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425   IFSC Code:- IOBA0000680

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा के आगामी चार्तुमास से मालव भूमि इन्दौर उपकृत होगी

✻ सर्व विरती की आराधना उपधान का मंगल आगाज हुआ। ✻ जैनाचार्यश्री दिनांक 16 अक्टूबर को सूरी मंत्राराधना मौन साधना के साथ विराजित हुए। ✻2नवंबर को साधना की पूर्णाहुति के साथ धर्मिष्ठों को नववर्ष की महामांगलिक प्रदान करेंगे। ✻ मुनिराज श्री कींतिरत्नसागरजी की गणि पदवी नवंबर के अंतिम सप्ताह में जयपुर में ही होने की विश्वशनीय सूत्रों से जानकारी। ✻ मुनिराज श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. 17 जुलाई से भगवती सूत्र के योगोध्दहन की क्रिया कर रहे है। ✻ मालवा आगमन की संभावना पूरी है।

तपस्वी वरघोड़ा	उपधान	मालारोपण
मगसर सुद-1		मगसर वद-30
दिनांक 2 दिसम्बर 2024		दिनांक 1 दिसम्बर 2024

जयपुर- गुरु का मतलब क्या है ? गुरु का पद गौरव और गरिमा दी गई है। गुरु का अर्थ है जो हमें वहां पहुंचा दे जहां से मुक्ति का मार्ग आसान हो जावे। ऐसा ही मार्ग बतानेवाले संत प्रवर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराजा का चार्तुमास जयपुर वालों ने करवाया है। आपके श्रमणाचार को देखकर जयपुरवाले चकित है, चार्तुमास के चार माह में एक दिन भी जयपुरवाले को शांत नहीं बैठने दिया आपने। निरंतर धर्म की प्रवृत्तियों से जोड़े रखा। एक श्रेष्ट धर्म प्रबंधक और पुरुषार्थी श्रमण संत की जोरदार भूमिका निभाते हुए आपने महामांगलिक हो, महोत्सव हो, महापर्व पर्व हो, सभी आयोजन में आपने संयम, शांति, सद् विवेक से सफलता के मेरु शिखर पर ले जाने में आपने कोई कसर नहीं छोड़ी। आपके युवा सुशिष्यों की निरंतर सक्रियता और धर्माराधना में गंभीरता से आपको भी पूर्ण सहयोग मिला। धर्माराधना का प्रबल प्रभाव जयपुर में स्पष्ट दिखाई दिया है।

वर्तमान तीर्थाधिपति तीर्थंकर परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी का विशाल लाल मंदिर जवाहर नगर जयपुर की शान है। श्री वीरप्रभु की छत्राछाया में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के अभूतपूर्व आर्शीवाद और पूज्यश्री के नक्शे कदम पर चलते हुए नित्यप्रति शासन प्रभावना के नये इतिहास का सर्जन कर सागर समुदाय के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए सागर समुदाय की अभिवृद्धि कर युवा श्रमण को सम्मिलित करते हुए गुरुदेव के स्वप्न को साकार कर रहे युवा जैनाचार्य पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी महाराजा अमृत निश्रा में अब जयपुर में चार्तुमास का नवीन इतिहास रच गया है। अब जयपुरवाले के लिये आप निश्रा में देश विरती से सर्व विरती प्राप्त करानेवाली श्रावक से श्रमण बनाने वाली श्रेष्ट तपाराधना उपधान तप का शुभारंभ हो चुका है। प्रथम मुर्हूत 13 अक्टूबर को, द्वितीय मुर्हूत 15 अक्टूबर को हुआ था। उपधान तप के तपस्वियों की शोभायात्रा का दिनांक 1 दिसंबर को तथा 2 दिसंबर को मोक्ष मालारोपण होगा इसके साथ ही में आसोज की नवपद ओली आराधना 9 अक्टूबर से आरंभ होकर 17 अक्टूबर को पूर्ण हुई। परमात्मा प्रभुवीर की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रवचन, छट

आराधना भी होगी। पूज्यश्री 16 दिवसीय एकांत गुप्त मौन आराधना में विराजित है। आराधना की पूर्णाहुति के बाद नववर्ष की महामांगलिक 2 नवबंर को होगी।इसके पूर्व वर्धमान तप के पाये, मणिभद्र हवन कर आयोजप हुआ कार्तिक पूनम पर शत्रुंजय भावयात्रा होगी। पूज्यश्री के प्रथम सुशिष्य मुनिश्री कीर्ति रत्नसागरजी म.सा. को17 जुलाई से भगवती सूत्र के योगाध्दहन की आज्ञा पूज्यपाद गच्छाधिपति वचनसिद्धआचार्य भगवंत श्री नरदेव सागरसूरीजी महाराजा के आदेश पर चल रही है। मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. ने भी अपने गुरु के प्रति अहोभाव प्रदर्शित करते हुए कहा- पूर्ण समर्पित जीवन अर्पित गुरु संरक्षण हित आपके योग चल रहे है। अब गणि पदवी का आयोजन होगा जयपुर में ही होने की पूरी संभवना है गणि पदवी संभवतः नवबंर के अंतिम सप्ताह में हो सकती है। चार्तुमास के बाद मालवा के में आने की पूरी संभावना है मालवा के श्रीसंघों में विचरण का कार्यक्रम भी बनाया जा रहा है। आपश्री का आगमन उज्जैन भी होने की पूरी संभावना है। जिन शासन की अद्भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है उसकी तुलना करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्य श्री का पुण्य बल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर आपश्री के गुरुकुल के युवा मुनिपुंग जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठ धार्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया है पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा का गुरुकुल श्री वीर प्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है।

श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता, इन्दौर सहारानीय सेवा

इन्दौर- श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता ट्रस्ट, पीपलीबाजार, इन्दौर एक ऐसी पुरानी संस्था है जो आयंबिल तप की व्यवस्था के लिये यादगर काम कर रही है। संस्था ने अतीत में ही नहीं बल्कि वर्तमान में भी तपस्वियों के लिए उत्कृष्ट सेवाएं की है। वर्षभर यहां आयंबिल की व्यवस्था निर्बाध रुप से चलती रहती है आचार्य भगवंतों की प्रेरणा और लाभार्थियों का सहयोग इस कार्य के लिये मिलता रहता है।

इस वर्ष ओलीजी पर्व में लगभग 2500 आयंबिल यहां पर हुए जिसमें प्रथम और अंतिम दिन 300 से अधिक आयंबिल हुए। यह संख्या तपस्वियों की तपस्या और आस्था को दर्शाती है साथ ही संस्था के सेवकों की अथक मेहनत और समर्पण को भी दर्शाती करती है।

आयंबिल तप का महत्व जैन धर्म में अत्यन्त विशिष्ट है। यह आत्मशुद्धि और संयम का मार्ग है, जो मनुष्य को अपने जीवन में स्थिरता, शांति और मोक्ष की ओर अग्रसर करता है। तपस्वियों की इस महान साधना में श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता ट्रस्ट की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण बन रही है। संस्था के द्वारा तप को सरल और सातापूर्वक पूरा करने के लिये आवश्यक सभी व्यवस्थाएं की हुई है।

संस्था की ओर से सभी तपस्वियों के प्रति गहन आभार प्रकट करते है। तपस्वियों की साधना को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी सेवकों को भी विशेष धन्यवाद है जिनके सहयोग और समर्पण के बिना यह तप यात्रा संभव नहीं हो पाती। आपका यह निःस्वार्थ सेवा भाव हमेशा सराहनीय रहेगा।

आचार्य श्री अचलमुक्तिसागर सूरीजी म.सा. सूरी मंत्राराधना में

इन्दौर-पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव मार्तण्ड श्री मुक्तिसागर सूरीजी म. सा. ,आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में तपागच्छाधि राज अधिष्ठायकदेव श्री मणिभद्रवीर जी के प्रगट दिवस हवन महापूजन का आयोजनअच्छा रहा। इसके साथ ही इन्दौर के श्री संघों में 45 आगम की परिचय यात्रा का आयोजन अच्छा हुआ। पूज्य आचार्य श्री अचलमुक्ति सागरसूरीजी महाराज सूरी मंत्राराधना में विराजित हुवे है आराधना की पूर्णाहुति के बाद नववर्ष की महा मांगलिक 2 नवबंर को होगी। उत्तराधयन सप्ताह , दीपावली छट्ठ तथा कार्तिक पूनम पर शत्रुंजय भावयात्रा होगी।

श्री जीरावला पार्श्वनाथ में पौष दशमी पर 1008 अट्ठम तप का आयोजन सागर गच्छाधिपति की निश्रा में

✻ 2025 में पालीताना चार्तुमास की संभावना।

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्य पाद श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पौष दशमी पर विश्व विख्यात श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु के महातीर्थ जीरावला में 1008 अट्ठम तप का आयोजन होने जा रहा है। वाव निवासी गुरुदेव के परम भक्त ने चार्तुमास प्रवेश पर यह घोषणा की थी। श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पौष दशमी पर में अट्ठम का उत्तर पारणा 23 दिसंबर को तथा अट्ठम तप 24 से 26 दिसंबर तक होगा। पारणा 27 दिसंबर का होगा। आयोजन की रुपरेखा तैयार हो गई है। वर्ष 2025 का चार्तुमास पूज्यश्री लगभग पालीताना श्री सिद्धक्षेत्र में ही करेंगे। इसकी भी तैयारी चल रही है।

हारिज में श्री शंखेश्वर का छःरिपालित संघ

हारिज- पूज्य मुनिराज श्री दिव्य-पद्मविजयजी म.सा. एवं मुनि श्री हेमवल्लभ विजयजी की निश्रा में हारिज में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित हो रहा है। 17 नवंबर को छःरिपालित संघ का प्रस्थान हारिज से होकर श्री शंखेश्वर महातीर्थ में माल दिनांक 19 नवंबर को होगी। लाभार्थी श्रीमती मधुबहन पूनमचंद वोरा परिवार है।

श्री शंखेश्वर तीर्थ में अट्ठम तथा अर्हद् पूजन

शंखेश्वर-श्री शंखेश्वर पार्श्व नाथ महातीर्थ में पूज्य आचार्य श्री हेम वल्लभसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में अट्ठम तप के साथ अर्हद् पूजन का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 11 नवंबर को उत्तर पारणा के साथ 12-14 नवंबर तक अट्ठम तप तथा पारणा 15 नवंबर को होगा। आचार्यश्री हेमवल्लभसूरीजी महाराजा को 10,000 हजार आयंबिल पूर्णता की ओर है। यह आयोजन कलापूर्णसूरी स्मृति मंदिर में होने जा रहा है। वसंत बहन चम्पालाल शाह परिवार, मुंबई लाभार्थी है।

पाली में नाकोड़ा महातीर्थ संघ

पाली- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नयचंदसागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य मुनिवर श्री सुमतिचंदसागरजी म.सा. एवं मुनिराज श्री शीतलचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पाली से सुप्रसिद्ध विश्व विख्यात महातीर्थ श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित होने जा रहा है। संघ का प्रयाण 18 नवंबर को पाली से होगा। संघ माल श्री नाकोड़ा तीर्थ में 27 नवंबर को होगी। सम्पर्क 9799296468 है।

इचलकरंजी में 152 ओली आराधकों का पारणा हुआ

इचलकरंजी-इचलकरंजी- पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरी जी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री उज्वल रत्नसागरजी एवं साध्वी श्री हेमांगनिधि श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां आसोज शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन आसोज सुद 6 से दिनांक 9 से 17 अक्टूबर 2024 तक किया गया। 152 आराधकों ने ओली आयंबिल आराधना की। सामुहिक पारणा 18 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। यह आयोजन श्री राजस्थान जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ के तत्वावधान में हुआ।

अरिसा भवन में प्रतिष्ठा महोत्सव

पालीताना- आमूलचल जीर्णोद्धार के उपरांत नवनिर्मित त्रिशिखर युक्त श्री शांतिनाथ परमात्मा के जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। महोत्सव का शुभारंभ 13 नवंबर से होगा एवं प्रतिष्ठा 17 नवंबर को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्यपाद आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीजी महाराजा के साथ अनेक आचार्य भगवंत एवं साधु-साध्वी भगवंत की मंगल निश्रा रहेगी। चढ़ावों की जाजम 12 अक्टूबर को पालीताना में हुई। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधि कारक श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण जिनालय के जीर्णोद्धार एवं प्रतिष्ठा के प्रेरक और मार्गदर्शक है।

✻ प्रशस्त पुरुष की भक्ति करो, उसका स्मरण करो, गुणचिन्तन करो।

सिद्धक्षेत्र में सागर समुदाय के श्रमण-श्रमणी का स्नेह सम्मेलन होगा

✻ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के 150 वें वर्ष पर भव्य मिलन उत्सव।

पालीताना- पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री सागरानंद सूरीजी महाराजा के 150 वें जन्म महोत्सव के शुभ प्रसंग पर पालीताना में सागर समुदाय के श्रमण-श्रमणी गुरु भगवंतों का स्नेह सम्मेलन होने जा रहा है। आगम मंदिर के प्रांगण में होने जा रहे मिलन महोत्सव का आयोजन दिनांक 7 एवं 9 दिसंबर को होगा। पूज्यपाद गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागरजी महाराजा के मंगल आर्शीवाद से शासन प्रभावक आचार्य भगवंत श्री अशोक सागर सूरीजी महाराजा की मंगल निश्रा रहेगी। शुभ प्रेरणा आचार्यदेव श्री सागरचंदसागरजी महाराजा के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वीजी महाराज की मंगल उपस्थिति रहेगी।

वागड़ नरेश जैनाचार्यश्री की निश्रा में टूंकगिरी से गिरनार महातीर्थ का छ:रिपालित संघ निकलेगा

पालीताना- श्री गंथीया पार्श्वनाथ बीसा पोरवाड़ जैन श्वेतांबर श्री संघ डूंगरपुर के द्वारा आयोजित छःरिपालित संघ का भव्य आयोजन होने जा रहा है। पालीताना- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के तीसरे सुशिष्य पूज्य आचार्य देवेश श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीमोक्षरत्नसागर जी ,मुनिश्रीपद्मरत्नसागरजी आदि ठाणा की निश्रा में30 **दिसंबर को ढंकगिरी से प्रस्थान होकर** 3 **जनवरी को संघ की पूर्णाहुति गिरनार तीर्थ में होगी।** छःरि पालित संघ के आयोजन की रुपरेखा बन रही है। ओली आराधना के साथ सरस्वती महापूजन, उत्तराधायनसप्ताह , दीपावली छट्ठ तथा कार्तिक पूनम पर शत्रुंजय भावयात्रा होगी। चार्तुमास के बाद संघ के साथ अन्य धार्मिक आयोजन की रुपरेखा बन रही है।

तपस्वी और मुमुक्षु की शोभायात्रा निकली

देवास- यहां श्री आदिश्वर जैन श्वेतांबर जिनालय में विराजित साध्वीवर्या श्री शीलरेखा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में तपस्वी साध्वीजी तथा मुमुक्षु बहन परिधी की भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। 20 अक्टूबर को पूज्य साध्वी श्री श्रेयकवर्षाश्रीजी के भद्रतप की पूर्णाहुति तथा परमात्मा प्रभुवीर के शासन को आगे बढ़ाने के लिये संयम को आकांक्षी मुमुक्षु बहन परिधी जैन की भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। परिधी कर दीक्षा 19 जनवरी को भाबरा में साध्वीश्री स्वर्णज्योतिश्रीजी की निश्रा में होगी बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने शोभायात्रा को सफल बनाकर साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन भी हुआ।

श्री सरस्वती महापूजन पढ़ाई गई

पूना- यहां श्री राजगृही श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्रीसंघ कोढ़वा में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्यश्री विराग सागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव शिरोमणी श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराज एवं साध्वीवर्या श्री सिद्धपूर्णा श्रीजी महाराज की निश्रा में श्री सरस्वती महापूजन पढ़ाई गई। 13 अक्टूबर को हुई इस ज्ञान वृद्धि आराधना में बच्चे-बूढ़े सभी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। आयोजन गरिमापूर्ण रहा।

सराक क्षेत्र में अंजनशलाका की श्रृंखला

पुरलिया- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री मुक्तिप्रभसूरीजी महाराज एवं आ. देवेश श्री विनीतप्रभ सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में श्री शंखेश्वरपुरम् पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ के साथ तद्ग्राम, सुन्दराबाघ, बागदवाड़ी, दुर्मुठ, फुलुडीट आदि गांवों में जिन मंदिरों में परमात्मा जिनबिंब की प्रतिष्ठा हेतु अंजनशला का आयोजन होने जा रहा है। श्री शंखेश्वरम् तीर्थ में 23 से 25 जनवरी 2025 तथा तद्गांव में 27 जनवरी, सुन्दराबाघ में 31 जनवरी, बागदवाड़ी में 3 फरवरी दुर्मुठ में 7 फरवरी तथा फुलवृद्धि में 13 फरवरी को महोत्सव का आयोजन होगा। पांच सराक गांव में शिखरबध जिनालय तथा चार आराधना का निर्माण का लाभ पुखराजजी जेठमल जैन परिवार वालों ने लिया है।

गणिवर्य अध्यात्म योगी ने 16 दिवसीय वर्धमान विद्या आराधना मौन साधनापूर्वक की

✻ नूतन वर्ष की महामांगलिक प्रदान कर धर्मिष्ठों को उपकृत किया।

अहमदाबाद-अहमदाबाद- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्श रत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा श्रमण -श्रमणीवृंद की अमृत निश्रा में गणिवर्य अध्यात्मयोगी श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा.16 अक्टूबर को श्री वर्धमान विद्या की 16 दिवसीय मौन साधना में विराजित हुए। आपकी यह साधना नूतन वर्ष पर पूर्ण होने पर आपने धार्मिष्ठों को महामांगलिक प्रदान की। आपने इस 16 दिवसीय आराधना में सम्पूर्ण रुप से मौन रहकर 18 से 20 घांटे तक साधना करने के साथ आयंबिल और उपवास किये। प्रतिदिन 7000 पुष्पों के साथअनुष्ठान किया गया। साधना के दौरान प्रतिदिन जाप और वासक्षेप अनुष्ठान किया गया। 16 दिवसीय आराधना का लाभ श्रीमती सरयु बहन हसमुखभाई वोरा परिवार ने लिया।आराधना श्री मुनिसुव्रत स्वामी स्कायसिटी जैन संघ शैला में सम्पन्न हुई। दीपावली की आराधना का विशिष्ट आयोजन भी होगा। उत्तराध्ययन सूत्र पर विशेष प्रवचन तथा हुवे। उपधान तप के साथ दिनांक 15 अक्टूबर को मुहपत्ति एवं 18 पाप की संवेदना का अद्भूत आयोजन किया गया। मुहपत्ति से परमात्मा श्री वीर प्रभु की साधना आरंभ होती है। मुहपत्ति के महत्व और 50 बोल से मुहपत्ति कितनी महत्वपूर्ण धर्म उपकरण है। यह कार्यक्रम में दर्शाया गया। साथ ही 18 पाप स्थानक पर भी संवेदनशील आयोजन हुआ।

आगम मंदिर कात्रज में क्रांतिकारी जैनाचार्यश्री की निश्रा में उपधान तप

पूना- यहां श्री राजगृही श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्रीसंघ कोढ़्वा में चार्तुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्यश्री विराग सागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में की निश्रा में आगम मंदिर कात्रज में श्रावक से श्रमण बनने तपस्या उपधानतप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का उत्तर पारणा 20 अक्टूबर को होने के बाद 21 अक्टूबर का प्रवेश प्रथम मुहूत तथा 23 अक्टूबर को द्वितीय प्रवेश होगा। उपधान तप के तपस्वियों की भव्य शोभायात्रा 18 दिसंबर को आयोजित की गई है। 9 दिसंबर को मोक्ष मालारोपण आयोजन होगा। उपधान तप का आयोजन श्री संघ स्थविर उपधान समिति तथा विश्वरक्षा चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा किया जा रहा है।

✻ जीव "मेरा" मानता है वही दुःख है क्योंकि "मेरा" माना कि चिन्ता खड़ी हुई कि "यह कैसे होगा?"

लक्ष्मणी में प्रतिष्ठा महोत्सव

लक्ष्मणी- निमाड़ाचल की पंचतीर्थ में सम्मिलित श्री लक्ष्मणी तीर्थ में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। प्रतिष्ठा दिनांक 2 मार्च 2025 को होगी। प्रतिष्ठा पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयानंदसूरीजी महाराजा, आचार्यदेव श्रीमद् विजय दिव्यानंदसूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में सम्पन्न होगी।

लुधियाना में गुरु मंदिर का खात शिलान्यास

लुधियाना- जैनाचार्य श्री विजया नंद सूरी समाधि मंदिर गुंजरां वाला पाकिस्तान की प्रतिवृत्ति रुप लुधियाना में गुरु मंदिर का निर्माण होने जा रहा है। गुरु मंदिर का खात एवं शिलान्यास 13 अक्टूबर गांव फतुमा लुधियाना में पूज्यपाद आचार्य भगवंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय धर्मधुरि न्धर सूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में किया गया। गुरु मंदिर निर्माण के सम्पूर्ण लाभार्थी थड़ेवा ला परिवार है।

देवी सरस्वती लक्ष्मी का महानुष्ठान

इन्दौर- द्वारकापुरी स्थित श्री शीतलनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत यहां पूज्य साध्वीश्री मुक्तिरेखा श्रीजी एवं साध्वी अस्मिता श्रीजी म.सा. की निश्रा में माता सरस्वतीदेवी एवं माता श्री लक्ष्मीदेवी के महानुष्ठान का आयोजन 24 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। दीपावली पर संघ 108 परिवारों को दीपावली की मिठाई आदि सामग्री का वितरण भी किया गया।

श्री शंखेश्वर से गिरनार महातीर्थ का छ:रि पालित संघ लगभग एक महिने का रहेगा।

जूनागढ़- श्री सिद्ध सावन कल्याणक भूमि तीर्थोद्धार समिति के द्वारा श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महा तीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री धर्मरक्षितसूरीजी एवं श्री हेमवल्लभ सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित होने जा रहा है। श्री शंखेश्वर से संघ का प्रयाण 21 नवंबर को होगा, यहां से 29 नवंबर को बढ़वाण आगमन होगा। दिनांक 30 नवंबर को बढ़वाण से आरंभ होगा। दिनांक 12 दिसंबर को जेतपुर से चलकर 17 दिसंबर को गिरनार पहुंचकर संघ माल होगी।

श्री गिरनार महातीर्थ में नव्वाणु यात्रा का भव्य आयोजन होगा

गिरनार- पूज्यपाद आचार्य श्री कलापूर्णसूरी समुदाय के आचार्यदेव श्री पूर्णचंद्र सूरीजी महाराजा एवं पंन्यास प्रवर श्री पूर्णरक्षितविजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में नव्वाणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। यात्रा में प्रवेश दिनांक 14 नवंबर तक ले सकते है। यात्रा दिनांक 15 नवंबर से आरंभ होगी। यात्रा की पूर्णाहुति दिनांक 25 दिसंबर को होगी। इसके पूर्व पूज्यश्री की निश्रा में वंथली से गिरनार का छःरि पालित यात्रा आयोजित होगी।

चाणस्मा में बंधु बेलडी जैनाचार्यश्री की निश्रा में पौष दशमी आराधना होगी

चाणस्मा- बंधु बेलडी जैनाचार्य श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी, श्री विवेकचंद सागरसूरीजीश्री प्रसन्नचंदसागर सूरीजी, गणिवर्यश्री आनंदचंदसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में श्री भटेवा पार्श्वनाथ महातीर्थ में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पौष दशमी पर में अट्ठम का उत्तर पारणा 23 दिसंबर को तथा अट्ठम तप 24 से 26 दिसंबर तक होगा। पारणा 27 दिसंबर का होगा।

अंतरीक्ष महातीर्थ में अट्ठम तपाराधना

शिरपुर- श्री अंतषेश महातीर्थ में पौष दशमी पर परमात्मा श्री पार्श्वप्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम तप का आयोजन होने जा रहा है। 24 से 26 दिसंबर तक अट्ठम तप होगा उसके पूर्व 23 दिसंबर को उत्तर पारणा तथा 27 दिसंबर को पारणा होगा। तपाराधना का लाभ श्रीमती रोविंद्र बहन शाह परिवार ने लिया है।

***दर्पण में चेहरा नहीं चारित्र देखो**

मुनिश्री मुनिरत्नसागरजी ने श्री वर्धमान विद्या आराधना की

डूंगरपुर- यहां विराजित पूज्यपाद मालव भूषण आचर्य देवेश श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य मुनिश्री मुनिरत्नसागरजी म.सा. ने यहां श्री वर्धमान विद्या आराधना की। आपश्री दिनांक 16 अक्टूबर को गुप्त मौन आराधना में विराजित हुए। नववर्ष पर आपने आराधना पूर्ण होने के बाद महामांगलिक प्रदान की। इसके पूर्व

मातृ-पितृ वंदना का आयोजन हुआ

आजीवन आयंबिल तपस्वी मुनिश्री मुनिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां दिनांक 6 अक्टूबर को मातृ-पितृ वंदना का जोरदार आयोजन किया गया। साकत शाह और मीत शाह ने संगीत के साथ यह आयोजन प्रस्तुत किया। सैकड़ों की संख्या में उपस्थित धर्मिष्ठों ने माता-पिता के प्रति सम्मान को इस आयोजन में अनुभव किया गया।

इन्दौर में पुण्यपाल राजा के स्वप्न पर प्रवचन हुए

इन्दौर- यहां के श्री जैन श्वेतांबर तपागच्छ उपाश्रय ट्रस्ट के श्री आगमोद्धारक आराधना भवन रेसकोर्स रोड़ पर गणिवर्य श्री पद्मचंद्रसागरजी म.सा. की निश्रा में पुण्यपाल राजा को आये आठ स्वप्न पर आधारित प्रवचन हुवे। 20 अक्टूबर को प्रातः हुए प्रवचन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने भाग लिया। गुरुभक्त परिवार के द्वारा प्रभावना हुई।

पूज्यपाद सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में नवपद ओली आराधना पुस्तक का विमोचन हुआ

* वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री आत्मयशाश्रीजी की प्रेरणा रही।
* मुनिराज श्री विनम्रसागरजी म.सा.का विशिष्ट मार्गदर्शन रहा।
* श्री मणिभद्रवीर का हवन जोरदार रहा।

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं उपाध्याय श्री विनीत सागर जी म.सा. मुनिराज श्री देवप्रभ सागरजी म.सा.,वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री विनम्रसागर जी म.सा.आदि साधु-साध्वी मंडल की अमृत निश्रा में मुंबई के भायकला में आसो सुद -5 दिनांक 8 अक्टुबंर को तपागच्छ नायक श्री मणिभद्रवीर की महापूजन और हवन यह भव्य आयोजन अहिंसा संघ मुंबई के द्वारा किया गया। आयोजन बहुत गरिमापूर्ण था। इस मंगल प्रसंग पर सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री आत्म यशा श्रीजी की प्रेरणा से प्रकाशित नवपद आराधना की पुस्तक का विमोचन विशिष्टअतिथियों के कर कमलों के द्वारा किया गया। पुस्तक का प्रकाशन डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक के ज्येष्ठ भ्राता श्री बाबूलालजी बिजली वाला के द्वारा लगातार दूसरे वर्ष किया गया। पुस्तक का वितरण उज्जैन, मुंबई, पूना, इन्दौर, रतलाम के साथ अन्य संघों में किया गया। पूज्य मुनिराज विनम्रसागरजी म.सा. का विमोचन में खास मार्गदर्शन रहा।

पूज्य जैनाचार्यश्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा की निश्रा 99 यात्रा का आयोजन

पालीताना- 126 से अधिक शिष्य-प्रशिष्य संयमी आत्मन् की सम्पत्ति के मालिक108 फीट श्री आदिनाथ दादा की प्रतिमा के स्वप्न दृष्टा, जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री अशोक सागरसूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागर चंदसागरसूरीजी का चार्तुमास आगम मंदिर में चल रहा है। आयोजन में आपश्री की विशेष प्रेरणा रही। आपकी निश्रा में 99 यात्रा का आयोजन पालीताना में दिनांक 18 नवंबर से आरम्भ होगा। 99 यात्रा की पूर्णाहुति 6 जनवरी 2025 को होगी।साध्वीवर्या श्री विहितमाला श्रीजी म.सा. की मुख्य प्रेरणा है। आयोजन जंबुद्वीप से संचालित होगा। आयोजक संघवी शिल्पा बहन दिनेशचंद्र आदि वडेया परिवार है।

मगरल्ला तीर्थ में उपधान तप

मगरल्ला- श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की छत्राछाया में देशविरती से सर्वविरती का स्वाद चखानेवाली धर्माराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का आयोजन पूज्य आचार्यदेवेश श्री विजय युगप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य पंन्यास प्रवर श्री संयमप्रभजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में होगा। उपधान तप प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 25 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत प्रवेश 27 अक्टूबर को होगा। मालारोपण दिनांक 13 दिसंबर को आयोजित होगा। श्री कल्याण मंदिर जैन संघ वेसू सूरत के डीसा कल्याण मित्र परिवार के द्वारा उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है।

मंडार में उपधान तप

मंडार- श्री त्रिभुवन विजयपताका अभय मोक्ष उपधान तप समिति के द्वारा प्रवर समिति के कार्यवाहक पूज्य पाद गच्छाधिपति आचार्य देव श्री अभय देव सूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप होने जा रहा है। श्रावक से श्रमण बनने की तपस्या में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 18 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 20 अक्टूबर को होगा। मोक्ष मालारोपण 6 दिसंबर को होगा।

मेवाड़ में तीन तीर्थ में अंजन प्रतिष्ठा होगी

उदयपुर- श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर महासंघ के तत्वावधान में मेवाड़के तीन तीर्थों में अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। श्री आदेश्वर तीर्थ राजपुरा में 7 फरवरी को श्री करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ भोपाल-सागर में 23 फरवरी को तथा श्री दयालशाह किला तीर्थ राजसमंद में 3 मार्च 2025 को अंजन-प्रतिष्ठ होगी। विस्तृत समाचार की प्रतिक्षा है।

बंधु युगल जैनाचार्यश्री ने 16 दिवसीय सूरीमंत्र की गुप्त मौन आराधना के बाद नववर्ष की महामांगलिक प्रदान की

हुबली -जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागरसूरीजी महाराज एवं आयंबिल तप की 272 वीं ओलीजी आराधक जैनाचार्य श्री चन्द्ररत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री गोयमसागर जी म.सा. के साथ साध्वी वर्या श्री भव्यपूर्णा श्रीआदि ठाणा की अमृत निश्रा में पूज्य आयंबिल आराधक आचार्यदेव श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी महाराज 10 सितंबर को 16 दिवसीय मौन सूरीमंत्राराधना में विराजमान हुए, आराधना के लिये विशिष्ट साधना कक्ष का निर्माण किया गया था। आपश्री की आराधना के बाद 16 अक्टूबर को रात्री 12.39 बजे वाणी के जादूगर आचार्य देव श्री जितरत्नसागरसूरीजी महाराज 16 दिवसीय की सूरी मंत्राराधना में विराजमान हुवे । गुप्त मौन आराधना पूर्ण होने के बाद आपश्री ने नववर्ष की महामांगलिक प्रदान की। दीपावली पर उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रवचन भी हुवे ।चार्तुमास के बाद वे आगामी कार्यक्रम की रुपरेखा बनाई जा रही है।

ढंकगिरी से गिरनार का छःरिपालित संघ निकलेगा

गिरनार- गिरनार पर्वतमाला की टूक ढंकगिरी से गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन पूज्यपाद आचार्यदेव श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री सागरचंदसागरसूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में होने जा रहा है। संघ का प्रयाग 21 जनवरी 2025 को तथा संघ माल 26 जनवरी 2025 को गिरनार दादा के दरबार में होगी। अनेक संघ पतियों की लाभार्थी है। संघश्री मो.नं. 99934-30111 से सम्पर्क करें।

उत्तराध्ययन सप्ताह के अंतर्गत श्री प्रभुवीर की अंतिम देशना पर विशिष्ट प्रवचन हुए

❋ दीपावली पर विशिष्ट प्रवचन होंगे।

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनी राम पेढ़ी पर सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा -7 की निश्रा में शाश्वती आसोज ओली आराधना का आयोजन आसोज सुद 6 दिनांक 9 से 17 अक्टूबर 2024 तक हुवा लगभग 200 आराधकों ने आराधना का लाभ लिया ।दीपावली महापर्व पर परम तारक परमात्मा श्री वीरप्रभु की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र पर 26 अक्टूबर से 1नवबंर तक प्रवचन का आयोजन प्रातःकाल किया गया। धर्मिष्ठों के लिये नवकारसी की व्यवस्था की गई थी।

चलोड़ा तीर्थ में उपधान तप

कलिकुंड- श्री कलिकुंड पार्श्व नाथ महातीर्थ के समीप श्री चलोड़ा तीर्थ में उपधान तप की आराधना होने जा रही है। श्री चिंतामणी पार्श्व आराधक मंडल के द्वारा आयोजित श्रावक से श्रमण बनने की तप क्रिया में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विजय जय सुंदर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्यश्री प्रेम सुंदर सूरीजी महाराजा एवं साध्वीवर्या श्री बसंतप्रभा श्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा उपधान तप में रहेगी ।प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 21 नवंबर तथा द्वितीय प्रवेश 23 नवंबर को होगा। तप का मालारोपण 9 जनवरी को होगा। लाभार्थी श्री शांतिभाई चकुभाई शाह परिवार है। सम्पर्क- 9377277889

बड़ैद में त्रिदिवसीय महोत्सव

बड़ैद- पूज्य साध्वी श्री रत्नरिद्धि श्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री रत्नवृद्धि श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में त्रिदिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव का आयोजन 14 से 16 अक्टूबर तक किया गया। कुंभ स्थापना दीपक स्थापना श्री मणिभद्र हवन वास्तु पूजन तथा श्री शांतिस्नात्र महापूजन के आयोजन हुए। लाभार्थी श्रीमती चंदा बहन शांतिलालजी कुण्डल बोहरा थे।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- शत्रुंजय अवतार स्वरुप श्री केशरवाड़ी तीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विजय उदयप्रभ सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में भव्य उपधान तप की आयोजन आराधना दिनांक 20 अक्टूबर से आरंभ हुई । उपधान तप की तथा मोक्षमाल 8 दिसंबर को होगी।

धर्मचक्र तप पूर्णाहुति पर पंचान्हिका महोत्सव बंधु त्रिपुटी की निश्रा में हुआ

✻ मुनिश्री आगमरत्नसागरजी की 31 वीं ओली पूर्ण हुई।

गदक-जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म-व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में राजस्थान जैन श्वेतांबर श्री संघ के द्वारा धर्मचक्र तप की पूर्णाहुति पर पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्य मुनिप्रवरश्री आगम रत्नसागरजी म.सा. को वर्धमान तप की 31 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति भी हुई। 15 से 19 अक्टूबर तक आयोजित महोत्सव में श्री पार्श्वपंच कल्याणक पूजा, श्री धर्मचक्र महापूजन तथा 17 अक्टूबर को तपस्वियों की शोभायात्रा का आयोजन किया गया। 18 अक्टूबर को तपस्वियों के पारणे तथा लाभार्थी परिवार के घर पूज्यश्री के पगले हुए। अगले दिन सत्तर भेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला चल रहे है। आपश्री का चार्तुमास के बाद अनेक धार्मिक अनुष्ठानों के कारण बढ़ा व्यस्त समय रहेगा। कर्नाटक से मुंबई, शंखेश्वर, पालीताना की ओर विहार होने के साथ दो स्थानों पर अट्ठम तपाराधना तथा दो छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन आपकी निश्रा में होगा।

जम्बुद्वीप मार्गदर्शक जैनाचार्यश्री की निश्रा में महामंगलकारी उपधान तपाराधना

✻ प्रेरणा मार्गदर्शन जैनाचार्य श्रीसागरचंदसागरसूरीजी महाराज की।

पालीताना-ूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ पूज्य आचार्य देवेश श्री सागर चंद सागर सूरीजी, श्री सौम्यचंद्रसागरसूरीजी, श्री विवेकचंद्र सागरसूरीजी महाराज के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में पूज्यपाद आचार्यदेव श्री सागरचंदसागरसूरीजी महाराज की प्रेरणा और मार्गदर्शन में श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान का भव्य आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप आगम मंदिर और जंबुद्वीप परिसर में होगा। प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 12 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 14 अक्टूबर को था। उपधान के तपस्वियों की शोभायात्रा के बाद मोक्ष मालारोपण 30 नवंबर को आयोजित होगी। उपधान तप के मुख्य लाभार्थी श्रीमती वीणाबहन जयंतिलाल मेहता परिवार है।

✻ सात प्रकार के क्षेत्र?

1- साधु, 2- साध्वी, 3- श्रावक, 4- श्राविका, 5- जिनमूर्ति, 6- जिनमंदिर, 7- जिनागम।

श्री गिरनार में चार्तुमास एवं उपधान तप

गिरनार- श्री गिरनार महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा मे उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को हुआ। तपस्वियों की शोभायात्रा 29 नवंबर को तथा माल परिधान 30 नवंबर को होगी। आयोजक गांधी परिवार है।

श्री केशरियाधाम में उपधान तप आराधना होगी

गुलाबपुरा-श्री केशरिया धाम 24 जिनालय विजयनगर में आचार्यदेवश्री निपुणरत्नसूरीजी महाराज आदि ठाणा-6 की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की उत्कृष्ट तपस्या उपधान तप का आयोजन हो रहा है। उपधान तप का शुभरंभ प्रथम मुर्हूत दिनांक 19 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत 21 अक्टूबर को हुआ। उपधान तप की मालारोपण विधि 6 दिसंबर को होगी।

श्री आंतरिक्ष तीर्थ में पौष दशमी अट्ठम का आयोजन

आकोला- श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ महातीर्थ में पौष दशमी परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम तप का आयोजन होने जा रहा है। पंन्यास प्रवर श्री परमहंस विजयजी म.सा., पंन्यास श्री विमलहंस विजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अट्ठम का उत्तर पारणा 23 दिसंबर को तथा अट्ठम तप 24 से 26 दिसंबर तक होगा। पारणा 27 दिसंबर को होगा। अट्ठम तप के संपूर्ण लाभार्थी श्रीमती देविन्द्राबहन मनोहरलाल शाह परिवार है।

श्रीमद् विजय जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के आगामी विहार कार्यक्रम

✻ श्री चाणौद में जिनबिम्ब एवं देव-देवी प्रतिष्ठा 25 नवंबर 2025। ✻ श्री लाठाड़ा में जिन भक्ति महोत्सव।✻ श्री मुछाला महावीरजी तीर्थ में जिर्णोद्धार कृत नूतन (22) देहरियों की महामंगलकारी प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम 8 से 16 दिसंबर, प्रतिष्ठा शुभ दिन : मार्गशीर्ष शुक्ल 15 रविवार 15 दिसंबर 2024 । ✻ श्री शंखेश्वर विहार सुशील वाटिका-पाली में पोष दशमी की आराधना 24,25,26 दिसंबर 2024 को होगी। ✻ श्री खौड़ में चढ़ावों की जाजम 27 दिसंबर 2024 । ✻ श्री खिमाड़ा (रणावतोका) में जीवित महोत्सव।✻ श्री अष्टापद जैन तीर्थ सुशील विहार, रानीनगर में श्री अभिनव शत्रुंजयधाम की 99 यात्रा दिनांक 2 से 13 जनवरी 2025। ✻ श्री सिरोही शांतिनगर में गुरु मूर्ति प्रतिष्ठा 26 जनवरी 2025। ✻ श्री अंदोर में श्री सम्मेत शिखारजी पहाड़ में श्री सावलीया पार्श्वनाथ प्रभु की अंजन शलाका प्रतिष्ठा 31 जनवरी 2025। ✻ श्री बावली में श्री सुविधीनाथ भवन का उद्घाटन 2 फरवरी 2025 ।✻ पूज्य गुरुदेवश्री उदयपुर-श्री केसरिया जी की यात्रा कर हिम्मतनगर होते हुए श्री शंखेश्वर महातीर्थ पधारेंगे। **वि. सं. 2081 वर्ष का चातुर्मास बेंगलोर भवन, पालीताना में होगा।** आसोज मास में भव्य उपधान तप की आराधना सुसम्पन्न होगी।

अचल गच्छाधिपति की निश्रा में दंताणी तीर्थ में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव फरवरी माह में होगा

दंताणी- 2000 वर्ष प्राचीन श्री आर्य रक्षित जैन श्वेतांबर तीर्थ में श्री सीमंधरस्वामी 20 विहारमान 32 विजय महा विदेह तीर्थ श्री सिमंधर आर्य गुण कल्याणोत्सव के अंतर्गत अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन 13 फरवरी को होने जा रहा है। अचल गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री कलाप्रभ सागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में यह दस दिवसीय आयोजन होगा। मुंबई तथा अन्य स्थानों से 1000 से अधिक धर्मिष्ठों का आगमन इस आयोजन में होने जा रहा है।

1008 अट्ठम तप होंगे

नागेश्वर- श्री आदि घंटाकर्ण भक्ति मंडल के द्वारा श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में पौष दशमी पर 1008 अट्ठम तप की आराधना कराई जायेगी। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विजय कुलबोधि सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होनेवाले अट्ठम तप आराधकों का उत्तर पारणा 23 दिसंबर को तथा अट्ठम तप 24 से 26 दिसंबर को होंगे। पारणा 27 दिसंबर को होगा।

राजकोट में प्रथम बार शतावधान का आयोजन हुआ

राजकोट- राजकोट तपागच्छ मणियार संघ के तत्वावधान में श्री संघ के बच्चों का एक अद्भूत आयोजन दिनांक 27 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। बच्चों की याददाशत का जोरदार प्रदर्शन देखने में आया। पूज्य आचार्य देवेश बंधु-बेलड़ी के सुशिष्य गणिवर्यश्री तारकचंद्रसागरजी म.सा. एवं साध्वी श्री विपुलयशा श्रीजी म.सा. की निश्रा में बच्चों के शतावधान का पहली बार आयोजन हुआ।

क्षत्रिय कुंड नगरी खड़्की में उपधान तप का आयोजन

पूना- पूना के उपनगर खड़्की में उपधान तप का आयोजन हो रहा है। पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री वैराग्यरत्न सागरसूरीजी महाराज, मुनि श्री ऋषभ रत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ साध्वी श्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा. के साथ प्रेरक साध्वीवर्या श्री दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा., साध्वी श्री अक्षयदर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की यह तप आराधना प्रथम मुर्हूत दिनांक 21 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत 23 अक्टूबर से आरंभ हुई। तपस्वियों की रथयात्रा का आयोजन 7 दिसंबर तथा 8 दिसंबर को तपस्वियों की मोक्ष मालारोपण सम्पन्न होगी। इस तपराधना के लिये खड़्की में क्षत्रिय कुड नगरी का निर्माण किया गया है।

गुणियाजी तीर्थ में भट्ट मुर्हूत होगा

मुनियाजी- श्री गौतम स्वामीजी महाराज की केवलज्ञान प्राप्ति भूमि श्री गुणियाजी तीर्थ का जीर्णोद्धार का नवीन जिनप्रसाद संकुत का निर्माण करने के लिये भट्ट मुर्हूत का चढ़ावा हुआ। भट्ट मुर्हूत का चढ़ावा 20 अक्टूबर को हुआ। मुर्हूत 11 दिसंबर को होगा। समस्त गच्छ समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंतों के आर्शीवाद से पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री जिनमनि प्रभसूरीजी महाराज की से श्री गौतम स्वामी मुनियाजी तीर्थ जीर्णोद्धार समिति तथा श्री जैन श्वेतांबर भंडार तीर्थ पावापुरी के सहयोग से यह आयोजन हो रहा है।

रतलाम में महाशतावदान गणिवर्य श्री चंद्रप्रभचंद्र सागरजी महाराज ने आत्मशक्ति का परिचय दिया

रतलाम-शतावधान युग प्रवर्तक, शिष्य शिल्पी वर्धमान तपोनिधि प. पू. आचार्यश्री नयचंद्र सागरसूरीजी महाराज सहस्त्रावधानी प.पू.गणि डॉ. श्री अजित चंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 20 अक्टूबर को आत्म एवं अध्यात्म शक्ति का जोरदार प्रदर्शन रतलाम के धर्मिष्ठों को देखने का मौका मिला । चंद्रप्रभचंद्रसागरजी म.सा.ने 200 वस्तुओं को याद में रखकर आत्म शक्ति का अद्भूत परिचय दिया। चम्पा विहार में हुए आयोजन में सैकड़ों धर्मिष्ठों और लब्धि प्रतिष्ठित लोगों के मध्य पूज्यश्री ने स्मरणशक्ति का चमत्कारी परिचय देकर सभा को चमत्कृत कर दिया । ऐसा आयोजन रतलाम में दूसरी बार हुआ। पूर्व में भी ऐसा एक आयोजन हुआ था जिसमें शतावधान प्रस्तुत किया गया था।

आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी निश्रा में 19 दीक्षा 5 छःरि पालक संघ की जय बोली गई

सूरत- अड़ाजन पाटिया विस्तार के श्री रांडेर रोड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ के तत्वावधान में पूज्य दीक्षा दानेश्वरी आ.श्री गुणरत्नसूरिश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न, श्रमणी गणनायक आ.श्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं निश्रा में चार्तुमास बाद 19 दीक्षाएं निश्चित हुई है । बारी-बारी से मुर्हूत निकल रहे है। 5 छःरि पालक संघ की जय बोली गई । रामपावन भूमि (सूरत-पाल) में गुरुभक्त परिवार द्वारा 12-10 अक्टुबर2024 से भव्य उपधान आरंभ हुआ कांसा के सेट, पौषध सामग्री अर्पण व स्वर्ण से बहुमान होगा ।आचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीजी व प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखा श्रीजी का आगामी 2025 चार्तुमास अमदावाद-रेवा जैन संघ (वासना) में घोषित किया गया। गिरनार छःरि-पालित संघ 24 दिसंबर से तथा 7-1-2025 को राजहंस परिवार, सूरत से दिनांक 20 से 24 दिसंबर हस्तगिरि से पालीताना गिरनार से पालीताना छःरि पालक संघ 17 से 31 जनवरी 2025 मिश्रीफूल परिवार द्वारा,बणथली से गिरनार 10 से 14 जनवरी 2025 तक राजकोट निवासी संघवी भारती बेन विपीनचंद की ओर से निकलेगा । चैत्री ओली शंखेश्वर तीर्थ में होगी।

अठारिया आराधना का आयोजन

हैदराबाद-यहां दिनांक 27 दिसंबर से 14 जनवरी 2025 तक अठारिया उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। सभी उम्र के आराधक इस उपधान तप से जुड़ सकते हैं । पूज्य मुनिराज अभिनंदनचंद्रसागरजी म.सा. जो आचार्य भगवंत श्री नयचंद्र सागर सूरीजी के सुशिष्य है, आपश्री आदि ठाणा-5 की निश्रा रहेगी। साध्वी श्री भावरत्नाश्रीजी आदि ठाणा-8 भी निश्रा प्रदान करेंगे । इसी के साथ दिनांक 7 से 14 जनवरी तक पौषध शिविर का आयोजन भी किया जायेगा । यह आयोजन जिन कुशल दादावाड़ी जैन मंदिर में होगा।

बोलिया में उपधान तप होगा

बोलिया- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्म भूषणरत्न सूरीजी महाराजा, पंन्यास श्री ऋषभरत्न विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 12 अक्टूबर से उपधान तप आरंभ होगा एवं उपधान माल 30 अक्टूबर को होगी।

श्री गिरनार की 99 यात्रा का आयोजन

महेसाणा- श्री उपनगर महेसाणा से संचालित श्रीमती अरुणा बहन चेतन कुमार शाह परिवार के द्वारा श्री गिरनार की 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य देवेश श्री विजय जिनेशरत्नसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित होने वाली 99 यात्रा के प्रवेश पत्र दिसंबर में दिये जायेंगे।

मुंबई में विश्व मैत्री महोत्सव मनाया गया

मुंबई- यहां के बिरला मातोश्री सभागार में 6 अक्टूबर को विश्व मैत्री महोत्सव का आयोजन किया गया। मैत्री समागम में मुंबई में विराजमान सभी गच्छ के गुरु भगवंतों का आगमन हुआ था। आचार्यश्री मतिचंदसागर सूरीजी म.सा. की मंगल उपस्थिति रही। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री शिन्दे, सांसद श्री आढवाले आदि अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ था। अनेक समाजसेवी विशिष्ट अतिथि की उपस्थिति रही । समाज सेवियों को समाज गौरव अलंकरण से सम्मानित किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- कार्तिक सुदी-1	शनिवार	02/11/2024	नूतन वर्षारंभ वीर निर्वाण संवत् 2551 श्री गौतमस्वामी केवलज्ञान
2- कार्तिक सुदी-5	बुधवार	06/11/2024	ज्ञान पंचमी
3- कार्तिक सुदी-14	गुरुवार	14/11/2024	चौमासी चवदस
4- कार्तिक सुदी-15	शुक्रवार	15/11/2024	श्री सिद्धाचल महायात्रा आरंभ कतिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्यश्री का जन्मदिन

पंचक :- **आरम्भः-**कार्तिक सुदी-8, दिनांक 9/11/2024, शनिवार, समय-15.45 बजे से
समाप्तः-कार्तिक सुदी-12, दिनांक 13/11/2024, बुधवार, समय-3.13 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-**मार्गशीर्ष-5, दिनांक 20/11/2024, बुधवार, समय-14.51 बजे से
समाप्तः-मार्गशीर्ष-6, दिनांक 21/11/2024, गुरुवार, समय-15.36 बजे तक

बीज में वृक्ष बनने की और इंसान में भगवान बनने की क्षमता होती है जिस तरह बीज में वृक्ष बनने की शक्ति होने के बावजूद बीज को ही वृक्ष नहीं माना जा सकता, जिस तरह दूध में मक्खन बनने की शक्ति होने के बावजूद उसे मक्खन नहीं माना जा सकता है, उसी तरह हर मनुष्य में भगवान बनने की शक्ति तो है लेकिन इसी आधार पर मनुष्य अपने आप को भगवान मान ले यह कदापि उचित नहीं है।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

-:विशेषांक :-

✻ माह दिसंबर 2024 का आगमोद्धारक का अंक श्री पार्श्वनाथ प्रभु पर आधारित ''श्री पार्श्व विशेषांक'' रहेगा। आपकी रचनाएं भेजिए।

✻ माह जनवरी 2025 में आगमोद्धारक का अंक जैन ज्ञान पर आधारित ''अहो जिन शासनम् विशेषांक''रहेगा। आपकी रचनाएं भेजिए।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 29 | कार्तिक-मागसर | नवम्बर - 2024 | अंक 11 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति,   बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897